A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 24 मई, 2026
इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 11 अंक 231, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

गर्मी और प्यास

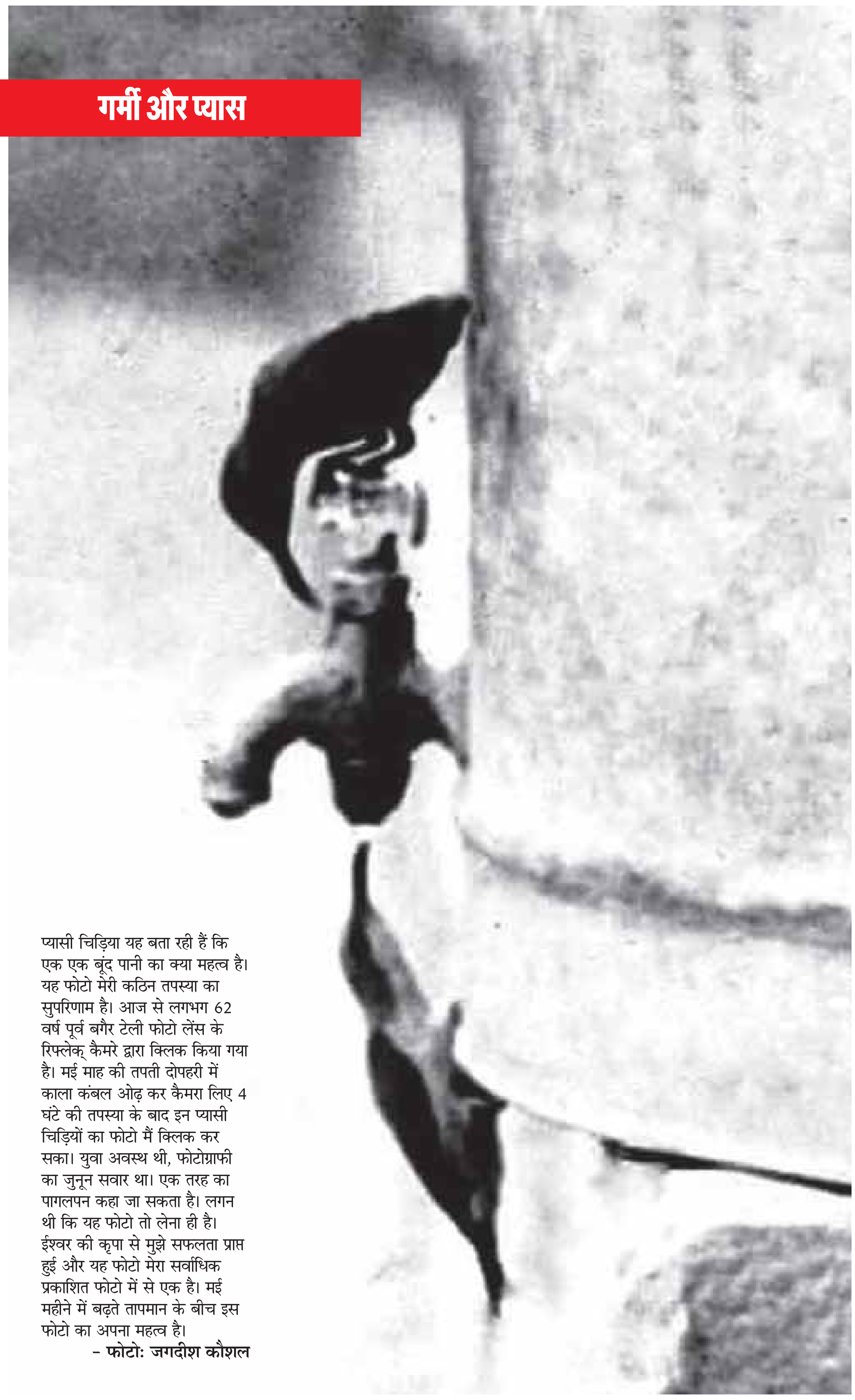

प्यासी चिड़िया यह बता रही हैं कि एक एक बूंद पानी का क्या महत्व है। यह फोटो मेरी कठिन तपस्या का सुपरिणाम है। आज से लगभग 62 वर्ष पूर्व बगैर टेली फोटो लेंस के रिफ्लेक् कैमरे द्वारा क्लिक किया गया है। मई माह की तपती दोपहरी में काला कंबल ओढ़ कर कैमरा लिए 4 घंटे की तपस्या के बाद इन प्यासी चिड़ियों का फोटो मैं क्लिक कर सका। युवा अवस्थ थी, फोटोग्राफी का जुनून सवार था। एक तरह का पागलपन कहा जा सकता है। लगन थी कि यह फोटो तो लेना ही है। ईश्वर की कृपा से मुझे सफलता प्राप्त हुई और यह फोटो मेरा सर्वाधिक प्रकाशित फोटो में से एक है। मई महीने में बढ़ते तापमान के बीच इस फोटो का अपना महत्व है।

- फोटो: जगदीश कौशल

फिर बढ़ गए 'पेट्रोल-डीजल' के दाम

- पेट्रोल 87 पैसे और डीजल 91 पैसे हुआ और महंगा
- हैदराबाद, कोलकाता और मुंबई बने सबसे महंगे शहर
- 9 दिन में दो बार बढ़ोतरी हुई, पाकिस्तान में कम हुए

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में एक बार फिर बढ़ोतरी की गई है। दिल्ली में पेट्रोल 87 पैसे महंगा होकर 99.51 प्रति लीटर पहुंच गया है। डीजल 91 पैसे प्रति लीटर महंगा हुआ है। इसके दाम 92.49 पर पहुंच गए हैं। इसके अलावा दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी की कीमतें 1 किलो बढ़ गई हैं। इस बदलाव के बाद दिल्ली में सीएनजी अब 81.09 प्रति किलो मिलेगी। पिछले 9 दिन में यह तीसरी बढ़ोतरी है। इससे पहले सरकार ने 15 मई को सीएनजी के दाम 2 और फिर 18 मई को 1 बढ़ाए थे। कोलकाता, बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे महानगरों में ईंधन की कीमतें सबसे ज्यादा रहीं। इन शहरों में ताजा बदलावों के बाद भी पेट्रोल और डीजल की कीमतें ऊंचे स्तर पर बनी रहीं। ताजा बदलाव के बाद पूरे देश में पेट्रोल की कीमतों में 87 पैसे प्रति लीटर और डीजल की कीमतों में 91 पैसे प्रति लीटर तक की बढ़ोतरी हुई है।

अबकी बार...जनता की कमाई पर किश्तों में लूटमार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में एक बार फिर बढ़ोतरी की गई है। बीते 10 दिनों में तीसरी मौका है जब पेट्रोल-डीजल के भाव ऊपर गए हैं। पेट्रोल की कीमतों में 87 पैसे प्रति लीटर का इजाफा किया गया है, वहीं डीजल के रेट 91 पैसे प्रति लीटर बढ़ाए गए हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने इस मुद्दे पर सरकार को घेरा है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार में असली संकट नेतृत्व का है और यह बात अब सभी देशवासी समझ चुके हैं। खरगे ने कहा कि पेट्रोल अब हुआ 100 रुपये पार, अबकी बार जनता की कमाई पर किश्तों में लूटमार। 1000 रुपये करोड़ का केंद्रीय कर लगाकर भाजपा का पेट नहीं भरा।

तेल की बढ़ी कीमतों के बाद देश के सबसे महंगे शहर

हैदराबाद में पेट्रोल की कीमत 112.81 रुपये प्रति लीटर रही, जबकि डीजल की कीमत 100.94 रुपये प्रति लीटर थी। कोलकाता में पेट्रोल की कीमत में 94 पैसे की बढ़ोतरी हुई और यह 110.64 रुपये प्रति लीटर हो गया, जबकि डीजल की कीमत 95 पैसे बढ़कर 97.02 रुपये प्रति लीटर हो गई। बेंगलुरु में पेट्रोल की कीमत में 93 पैसे प्रति लीटर की बढ़ोतरी के बाद यह 108.05 रुपये प्रति लीटर हो गई, जबकि डीजल की कीमत 95 पैसे प्रति लीटर बढ़कर 95.99 रुपये प्रति लीटर हो गई।

सुप्रभात

लोग वैर भाव बोते हैं,
कवि किसान होता है
कविता की क्यारियों में बीज बोता है
फूलों की पौध तैयार करता है ,
हरी-भरी हो धरती,
मीठे जल वाली
डरावनी नहीं हो नींद
फूलों से खिलते रहें
सुकुमार बच्चे
कुम्हलाए नहीं चेहरे
कभी यही सपना देखा है
रंगों में रेखाओं में
गीत की लय और
संगीत की धुन में ,
और जब यह नहीं होता
झगड़ पड़ता है
फिर दुनिया का कोई भी नादिरशाह
हो सामने।

- रतन चौहान

19वें रोजगार मेले में 51000 युवाओं को मिले जॉब लेटर

- पीएम मोदी बोले-अब आप देश की विकास यात्रा में शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को 51 हजार से ज्यादा युवाओं को सरकारी नौकरी के लिए अपॉइंटमेंट लेटर दिए। इसमें चुने गए युवाओं को रेलवे, गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य विभाग, वित्तीय सेवा और उच्च शिक्षा समेत कई सरकारी विभागों में नौकरी मिली। देश के 47 शहरों में हुए 19वें रोजगार मेले में पीएम मोदी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए शामिल हुए। उन्होंने युवाओं से बातचीत भी करेंगे। इससे पहले देशभर में 18 रोजगार मेले हो चुके हैं, जिनमें करीब 12 लाख युवाओं को अपॉइंटमेंट लेटर दिए जा चुके हैं। पीएम मोदी बोले- 5 देशों की इस यात्रा के दौरान मैंने कई देशों की बड़ी कंपनियों के नेताओं के साथ बातचीत की। हमारी विस्तृत चर्चाएं और बैठकें हुईं। हर जगह, मैंने लगातार एक बात महसूस की, दुनिया भारत के युवाओं और भारत की तकनीकी प्रगति को लेकर बेहद उत्साहित है। प्रधानमंत्री ने कहा-नीदरलैंड्स से सेमीकंडक्टर लेंगे।

सिंगरौली में स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का सीएम ने किया भूमिपूजन

सिंगरौली (नप्र)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव शनिवार को सिंगरौली जिले के दो दिवसीय प्रवास पर पहुंचे। उन्होंने एनसीएल ग्राउंड में 1 करोड़ 14 लाख रुपए की लागत से बनने वाले स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का भूमिपूजन किया।

इस अवसर पर जिले की प्रभारी मंत्री एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री संपतिया उइके, पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री राधा सिंह, सांसद राजेश मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

भूमिपूजन कार्यक्रम के बाद मुख्यमंत्री मोहन यादव विंध्यनगर रोड स्थित भाजपा जिला कार्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने जिले की तीनों विधानसभा क्षेत्रों से आए कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए बताया कि उन्होंने

अब हर जिले के दौरे के दौरान कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद करने का निर्णय लिया है। उन्होंने संगठन को मजबूत बनाने में कार्यकर्ताओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। मुख्यमंत्री के दौरे के दौरान स्थानीय पत्रकारों को कवरेज से दूर रखने को लेकर नाराजगी भी सामने आई। एनसीएल ग्राउंड में आयोजित भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान कई पत्रकारों को अंदर जाने से रोका गया, जिससे मीडिया कर्मियों में असंतोष देखा गया।

25 मई मनेगा स्थापना दिवस

शाम को मुख्यमंत्री बैढ़न स्थित राजमाता चुनकुमारी स्टेडियम में आयोजित बॉलीवुड नाइट कार्यक्रम में शामिल होंगे। सिंगरौली में 23 से 25 मई तक सिंगरौली स्थापना दिवस के अवसर पर सिंगरौली महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजन कार्यक्रम शामिल हैं।

अमरनाथ से आ गई बाबा बर्फानी की पहली तस्वीर

- पवित्र गुफा में 6-7 फीट का शिवलिंग बना, यात्रा 3 जुलाई से

श्रीनगर (एजेंसी)। अमरनाथ यात्रा शुरू होने से पहले शनिवार को बर्फ से बने शिवलिंग (बाबा बर्फानी) की पहली तस्वीरें सामने आ गई हैं। तस्वीरों में दिख रहा है कि 6 से 7 फीट का शिवलिंग अपना आकार ले चुका है। इस दौरान सुरक्षा के लिए तैनात जवानों ने सबसे पहले शिवलिंग के दर्शन भी किए। अमरनाथ यात्रा इस साल 3 जुलाई 2026 से शुरू होकर 9 अगस्त 2026 तक चलेगी। रास्ते में सामान्य जगहों पर 6 से 8 फीट और हिमस्खलन वाले इलाकों में 10 से 12 फीट तक बर्फ जमी है।

बालटाल मार्ग पर 9 किमी और नुनवान-पहलगाम मार्ग पर 8 किमी ट्रैक से बर्फ हटाई जा चुकी है। ट्रैक को 12 फीट चौड़ा करने, सतह सुधारने, रिटेनिंग वॉल और कल्वर्ट बनाने का काम भी चल रहा है। इस बार बेस कैंप में टेंट की जगह प्री-फैब्रिकेटेड और फाइबर स्ट्रक्चर बनाए जा रहे हैं। इससे श्रद्धालुओं को आरामदायक और आधुनिक आवास जैसी सुविधा मिल सकेगी। फाइबर स्ट्रक्चर तापमान में अचानक गिरावट और बारिश से निपटने में कारगर रहेंगे। हर इमारत में 48 कमरे हैं।

इस बार बाढ़ वाली जगह पर कैंप नहीं लगाए जाएंगे

इस साल सभी संवेदनशील हिस्सों और आपदा की आशंका वाले स्थानों को तीर्थयात्रियों के लिए 'नो-एंट्री जोन' घोषित किया गया है। बालटाल और नुनवान रास्तों के दोनों ट्रैक को चौड़ा किया गया है। पुलों को भी बेहतर बनाया गया है। बादल फटने और अचानक बाढ़ की घटनाओं को देखते हुए संवेदनशील जगहों पर कैंप नहीं लगाए जाएंगे। इस साल की अमरनाथ यात्रा के लिए अब तक 3.6 लाख से ज्यादा श्रद्धालु रजिस्ट्रेशन करा चुके हैं।

सुबह सवेरे
इंदौर ■ रविवार, 24 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

आजम खान को फर्जी पैन कार्ड केस में बड़ा झटका

● कोर्ट ने 3 साल बढ़ाई सजा! अब्दुल्ला आजम पर जुर्माना बढ़ाया

रामपुर (एजेंसी)। यूपी के पूर्व कैबिनेट मंत्री और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव आजम खान और उनके बेटे अब्दुल्ला आजम खान को दो पैन कार्ड मामले में शनिवार को बड़ा कानूनी झटका लगा है। रामपुर की एमपी-एमएलए कोर्ट ने आजम खान की सजा सात साल से तीन साल बढ़ाकर दस साल कर दी है। वहीं, बेटे अब्दुल्ला आजम की सजा सात साल बरकरार रखी है।

दोनों पर जुर्माना जरूर बढ़ाया है। आजम खान पर पांच लाख और बेटे अब्दुल्ला पर साढ़े तीन लाख जुर्माना किया है। आजम और अब्दुल्ला पहले से जेल में बंद हैं। रामपुर की सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सीमा सिंह राणा ने इस बारे में बताया कि अब्दुल्ला आजम खान के दो पैन कार्ड बनाने के केस में पहले पिता पुत्र को नवंबर 2025 में कोर्ट ने सात-सात साल की कैद और 50-50 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई थी।

बंगाल में बकरीद पर रहेगी सिर्फ एक दिन की छुट्टी

● सीएम शुभेंदु ने पलट दिया ममता बनर्जी का फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की शुभेंदु सरकार ने ईद-उल-जोहा यानी बकरीद पर छुट्टियों में कटौती की है। अब इस त्योहार पर सिर्फ एक दिन की छुट्टी रहेगी। शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व वाली बंगाल सरकार ने पिछली ममता सरकार के आदेश को बदल दिया है, जिसमें दो दिन की छुट्टी का प्रावधान था। सरकार ने नोटिफिकेशन जारी करते हुए कहा, उपर्युक्त अधिसूचना में आंशिक संशोधन करते हुए राज्यपाल महोदय ईद-उल-जोहा (बकरीद) के अवसर पर 28 मई, 2026 (गुरुवार) को सार्वजनिक अवकाश घोषित करते हुए प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। इसमें आगे कहा गया, ईद-उल-जोहा (बकरीद) से एक दिन पूर्व और ईद-उल-जोहा (बकरीद) के अवसर पर क्रमशः 26 मई, 2026 (मंगलवार) और 27 मई, 2026 (बुधवार) के लिए पहले से घोषित अवकाश रद्द किए जाते हैं। प्रतिष्ठानों के लिए कार्य दिवस होंगे, जिन पर अधिसूचना लागू होती है।

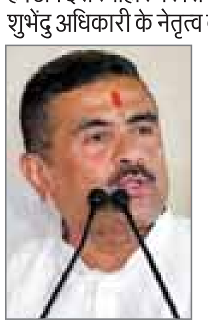

पीएम मोदी पर 'बदजुबानी' कर बुरे फंसे अजय राय

● महोबा की सदर कोतवाली में संगीन धाराओं में एफआईआर दर्ज

महोबा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के महोबा में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर कथित अभद्र टिप्पणी मामले में यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय फंस गए हैं। महोबा की सदर कोतवाली में अजय राय सहित उनके 30 समर्थकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। बीजेपी जिला कार्य समिति के सदस्य नीरज रावत की तहरीर पर अजय राय के खिलाफ संगीन धाराएं लगाई गई हैं। महोबा पुलिस ने अजय राय के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी और रास्ता जाम कर सरकारी काम में बाधा डालने का केस दर्ज किया है। नीरज रावत ने सदर कोतवाली में तहरीर देते हुए कहा कि शुक्रवार को कांग्रेस नेता ब्रजराज अहिरवार ने अपने समर्थकों के साथ जिला मुख्यालय के समद नगर मुहाल में एक कार्यक्रम रखा था। इस कार्यक्रम में बिना प्रशासनिक अनुमति के कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को बुलाया गया।

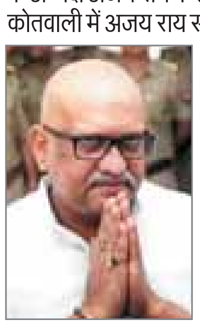

जम्मू-कश्मीर के जंगलों में छिपे हैं तीन आतंकी

● सुरक्षाबलों पर गोलीबारी की, सेना ने इलाका घेरा

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर के राजौरी जिले में आतंकवादियों की मौजूदगी के इनपुट के बाद सुरक्षाबलों के साथ सेना ने बड़ा ऑपरेशन शुरू किया है। सुरक्षाबलों ने तीन आतंकवादियों को घेरा है। सुरक्षाबलों ने इस कार्रवाई को ऑपरेशन शेरवाली नाम दिया है। शनिवार को हलचल की सूचना के बाद इलाके में फोर्स की तैनाती के बाद ऐक्शन शुरू किया गया। राजौरी जिले में सुरक्षाबलों की मुठभेड़ जारी है। शुरुआती रिपोर्टों के अनुसार इलाके में दो से तीन आतंकवादियों को हलचल का संदेह था। व्हाइट नाइट कोर ने एक्स पर बताया कि आज सुबह करीब 11.30 बजे, पुलिस और सीआरपीएफ के साथ मिलकर किए गए एक खुफिया-आधारित संयुक्त अभियान के दौरान, राजौरी के गंभीर मुगलन इलाके में आतंकवादियों से संपर्क स्थापित हुआ। उन्होंने बताया कि सैनिकों ने तुरंत कार्रवाई की।

● पुलिस-सेना-सीआरपीएफ का ऐक्शन- पीटीआई के अनुसार इलाके में संदिग्ध आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद दोरीमल-गंभीर मोगला इलाके में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया था। उन्होंने बताया कि पुलिस, सेना और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक संयुक्त टीम ने इलाके की घेराबंदी कर ली और बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान शुरू किया। अधिकारियों ने बताया कि घटनास्थल पर अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात कर दिए गए हैं। आखिरी रिपोर्ट मिली अभियान जारी था।

पीएम मोदी से मिले अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो

कई मुद्दों पर बात, अमेरिका आने का भी दिया न्योता

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत दौरे पर आए अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिले। इस दौरान कई अहम मुद्दों पर बातचीत हुई। मार्को रूबियो ने पीएम मोदी को व्हाइट हाउस आने का न्योता दिया। इस बैठक में विदेश मंत्री एस जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल सहित अन्य सीनियर अफसर भी मौजूद थे। मुलाकात के बाद पीएम मोदी ने एक्स पोस्ट में लिखा, अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो का स्वागत करके मुझे खुशी हुई। हमने भारत-यूएस व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी में लगातार हो रही प्रगति और क्षेत्रीय तथा वैश्विक शांति और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका वैश्विक भलाई के लिए मिलकर काम करते रहेंगे। भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने एक्स पर मीटिंग की फोटो शेयर की। उन्होंने लिखा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बैठक के लिए मार्को रूबियो के साथ शामिल होकर बहुत अच्छा लगा। हमने सुरक्षा, व्यापार और महत्वपूर्ण तकनीकों के क्षेत्रों में अमेरिका-भारत सहयोग को और गहरा करने पर जोर दिया।

किस उम्मीद में भारत आए

इससे पहले, सर्जियो गोर ने बताया था कि ट्रंप 2.0 के सबसे महत्वपूर्ण दौरों में से एक माने जा रहे इस भारत दौरे पर विदेश मंत्री मार्को रूबियो एक स्पष्ट संदेश लेकर आए हैं। 21वीं सदी में अमेरिका की सफलता के लिए भारत अपरिहार्य बना हुआ है। रणनीतिक साझेदारियों की असली परीक्षा यह है कि दोनों पक्ष मतभेदों को कैसे सुलझाते हैं और साझा आधार को कैसे बढ़ाते हैं। व्यापार, प्रौद्योगिकी, एआई और आपूर्ति श्रृंखलाओं से लेकर रक्षा और ऊर्जा तक, वाशिंगटन और नई दिल्ली को अलग-अलग रहने की तुलना में साथ मिलकर कहीं अधिक लाभ होगा।

पेयजल संकट ने ली 3 आदिवासी छात्राओं की जान

गांव से एक किमी दूर कुएं से पानी भरने गई थीं, हादसे में एक-दूसरे को बचाने में डूब गई

रायसेन (नप्र)। रायसेन में पेयजल संकट ने तीन आदिवासी छात्राओं की जान ले ली। घटना गैरतगंज तहसील के सगौर गांव की है। यहां लंबे समय से पानी की किल्लत बनी हुई है। गांव के लोगों को एक किमी दूर कुएं से पानी भरने जाना पड़ता है। शनिवार सुबह करीब 11 बजे चार छात्राएं पानी भरने के लिए गई थीं। वे वहां पर नहाने लगीं। इस बीच एक छात्रा का पैर फिसल गया। वह कुएं में गिर गई। उसे बचाने के लिए दूसरी छात्रा उतरी, लेकिन वह भी डूबने लगी। यह देख दोनों को बचाने के लिए तीसरी छात्रा भी कुएं में कूद गई, लेकिन पानी ज्यादा होने से तीनों बाहर नहीं आ सकीं और डूब गई। यह सब वहां मौजूद चौथी छात्रा अमीना देख रही थी। वह तुरंत गांव पहुंची। उसने परिजन और गांव वालों को बताया। गांववाले बच्चियों को बाहर निकालकर अस्पताल ले गए।

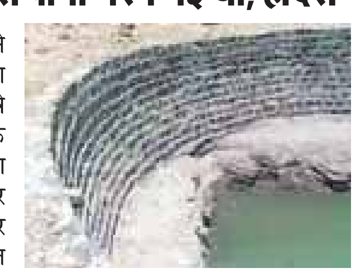

समाज का मूल आधार है सहकारिता - सहकारिता मंत्री श्री सारंग

*हस्तशिल्प से आजीविका संवर्धन पर आयोजित संगोष्ठी संपन्न

भोपाल। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि समाज का मूल आधार सहकारिता है। सहकारिता के माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र और दुनिया चलती है। जब तक एक-दूसरे का समन्वय, सहयोग और सहभागिता नहीं होती, तब तक किसी भी काम का परिणाम प्राप्त नहीं किया जा सकता। मंत्री श्री सारंग शनिवार को मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ में आयोजित हस्तशिल्प से आजीविका संवर्धन संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ द्वारा क्रियान्वित एवं विकास आयुक्त (हस्तशिल्प), वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित सीएचसीडीएस योजना अंतर्गत निर्मित सीएफसी कॉमन फैसिलिटी सेंटर का लोकार्पण भी किया। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि राज्य सहकारी संघ द्वारा विभाग की योजना के माध्यम से स्किल ट्रेनिंग प्राप्त करने से रोजगार के अवसर सृजित हो सकेंगे।

नई सरकार वाले

3 राज्यों में बड़े बदलाव की आहट

● तमिलनाडु सीएम विजय के काफिले के लिए अलग लेन ● केरलम में आशा वर्करों की सैलरी तीन हजार तक बढ़ाई

तिरुवनंतपुरम/चेन्नई/कोलकाता (एजेंसी)। बंगाल से तमिलनाडु और केरलम तक नई सरकारों ने सत्ता संभालते ही प्रशासनिक और सियासी, दोनों स्तरों पर खुद को अलग दिखाने की कोशिश शुरू कर दी है। तमिलनाडु के सीएम विजय ने शुरुआती 12 दिन में अपने काफिले के लिए ट्रैफिक न रोकने का आदेश दिया है। केरलम मे वीडी सतीशन सरकार ने सचिवालय व मंत्रियों के आवासों तक आम लोगों की पहुंच आसान कर दी। वहीं बंगाल में शुभेंदु ने भी पुलिस को कहा काफिले के लिए आम वाहनों को न रोका जाए।

तमिलनाडु

मुख्यमंत्री के लिए ट्रैफिक नहीं रुकता- सीएम विजय रोज सुबह सचिवालय पहुंचकर शाम तक रुकते हैं। घर से टिफिन लेकर पहुंचते हैं। सीएम का काफिला अलग लेन से गुजरता है, बाकी लेन में आवाजाही नहीं रुकती। 33 सदस्यीय कैबिनेट में 11 मंत्री 40 साल से कम और 32 नए मंत्री हैं। राज्यभर में 717 शराब दुकानें बंद हैं।

केरलम

सीएम के साथ सिर्फ दो वाहन- केरलम में सीएम के काफिले में अब सिर्फ दो वाहन रखे गए हैं। मंत्रियों के सरकारी आवासों का लग्जरी रेनोवेशन नहीं होगा। सिर्फ जरूरी बदलाव ही किए जाएंगे। नए मंत्री पिछली सरकार में खरीदी लग्जरी गाड़ियों से दूरी बना रहे हैं। पिछली सरकार का सिल्वरलाइन सेमी रेल प्रोजेक्ट रद्द।

बंगाल

विधानसभा कार्यवाही का लाइव टेलीकास्ट होगा- बंगाल के सीएम शुभेंदु अधिकारी ने वीआईपी मूवमेंट व सरकारी कामकाज से जुड़ी व्यवस्थाओं में बदलाव के निर्देश दिए हैं। उन्होंने अपने काफिले को छोटा रखने और अनावश्यक एस्कॉर्ट कम करने को कहा है। मंत्रियों पर सख्ती है।

सीधी में जिंदा जलने से 3 बच्चों की मौत

3-6 साल तक के थे, बिजली लाइन में स्पार्किंग से भड़की आग, देर से पहुंची थी फायर ब्रिगेड

सीधी (नप्र)। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में कच्चे मकान में लगी भीषण आग में तीन मासूम बच्चों की जिंदा जलकर मौत हो गई। आग ने कुछ ही मिनटों में पूरे घर को चपेट में ले लिया। अंदर मौजूद बच्चे बाहर नहीं निकल सके। ग्रामीण मौके पर पहुंचे और आग बुझाने की कोशिश शुरू की, लेकिन तब तक बच्चों की मौत हो चुकी थी। मृत बच्चों की पहचान डेढ़ वर्षीय रिधि साकेत, 6 वर्षीय धुम्मू उर्फ संध्या साकेत और 3 वर्षीय एक अन्य बच्चे के रूप में हुई है। सभी जमोड़ी के काशीहवा गांव के रहने वाले थे। हादसा शनिवार दोपहर करीब 1 बजे हुआ।

आग शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी, बच्चे अंदर फंसे रहे- गांव के पुष्पराज मिश्रा ने बताया कि घर के ऊपर से गुजर रही बिजली लाइन में स्पार्किंग हुई। चिंगारी पास में रखे बांस और सूखे सामान पर गिरी, जिसके बाद आग तेजी से फैल गई। देखते ही देखते पूरा कच्चा मकान आग की लपटों में घिर गया। घटना के समय घर बाहर से बंद था और अंदर तीनों बच्चे मौजूद थे। बच्चों की मां घर से जाते समय दरवाजा बाहर से बंद कर गई थी, जिससे बच्चे अंदर ही फंस गए।

आधे घंटे बाद पहुंची फायर ब्रिगेड- जमोड़ी थाना क्षेत्र के ग्राम काशीहवा में शनिवार दोपहर करीब 1 बजे आग लगी थी। सूचना मिलने के करीब आधे घंटे बाद दमकल की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं, लेकिन तब तक तीनों बच्चों की मौत हो चुकी थी।

मजदूरी पर गए थे पिता, राशन लेने गई थी मां- बच्चों के पिता रामरतन साकेत ने बताया कि उन्हें उनके सुपरवाइजर का फोन आया था, जिसने घर में आग लगने की जानकारी दी। उस समय उनकी पत्नी राशन लेने दुकान गई थी, जबकि तीनों बच्चे घर में अकेले थे।

घटना अत्यंत ही दुखद, मृत बच्चों के परिजन को दिये जायेंगे 6-6 लाख रुपये : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को सीधी जिले के ग्राम कसिहवा में शॉर्ट सर्किट से हुए एक हादसे में तीन बच्चों की मृत्यु हो जाने की घटना का त्वरित संज्ञान लिया है। उन्होंने कहा है कि घटना अत्यंत ही दुखद एवं हृदय विदारक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोकाकुल परिजन के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कर ईश्वर से दिवंगतों को शांति प्रदान करने की प्रार्थना की है। उन्होंने कहा है कि दुख की इस घड़ी में सरकार परिजन के साथ है। मुख्यमंत्री ने परिजन के लिए राहत राशि भी घोषित की है। उन्होंने कहा है कि मृत बच्चों के परिजन को राज्य सरकार की ओर से 6-6 लाख रुपये आर्थिक सहायता दी जायेगी। उन्होंने बताया कि जिला रेडक्रॉस सोसायटी, सीधी की ओर से परिजन को 20-20 हजार रुपये की तत्काल आर्थिक सहायता राशि दे दी गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा घटना पर तत्काल संज्ञान लेकर परिजन को 2-2 लाख रुपए आर्थिक सहायता देने की घोषणा की गई।

काशी की गंगा-जमुनी परंपरा के दूतः महंत प्रो. विश्वम्भरनाथ मिश्र

आज जन्मदिन पर विशेष

राजेन्द्र शर्मा
लेखक स्तंभकार हैं।

आईआईटी बीएचयू के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष और पर्यावरणविद प्रो. विशम्भर नाथ और विख्यात संकट मोचन मंदिर के महंत आंखों में चमक, कहन में वजन और अद्भुत निर्णय क्षमता वाले ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व है, जिन्हें चुनावी मौसम में हर राजनीतिक दल प्रभावित करना चाहता है। 2024 के लोकसभा चुनाव में चुनाव में 'इंडिया गठबंधन' ने उन्हें वाराणसी से प्रत्याशी बनाने का ऑफर दिया तो मतदान से तीन दिन पहले वाराणसी से चुनाव लड़ रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी उनसे मिलने संकट मोचन मंदिर जा पहुंचे। प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र आज अपने 61वें वर्ष में प्रवेश कर रहे है। चौबीसों घंटे काम करने वाले महंत जी के पास राजनीति के लिए न वक्त है और ना उनकी कोई इच्छा। प्रो. मिश्र प्रो० विशम्भर नाथ मिश्र काशी और काशी की सनातन धर्म परम्परा और गंगा-जमुनी तहजीब के ब्रांड एंबेसेडर हैं। सरल, सहज स्वभाव के प्रो. मिश्र खांटी बनारसी हैं और सत्ता के शीर्ष दुर्गों की मर्यादित आलोचना और बेलाग बात कहने के लिए जाने जाते हैं। देश के प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र के मतदाता प्रो. मिश्र साफ कहते हैं कि सरकारें हमारे सहयोग के लिए हैं, हम पर शासन के लिये नहीं। गंगा आंदोलन के प्रणेता स्वर्गीय वीरभद्र मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र प्रो. विशम्भर नाथ कहते हैं कि अगर गंगा का अस्तित्व खत्म हो जाएगा तो हम सब स्वतः समाप्त हो जाएंगे। मेरे जीवन का एक ही लक्ष्य है कि मां गंगा में एक बूंद भी सीवर न गिरे। इसी उद्देश्य से संकट मोचन फाउंडेशन की

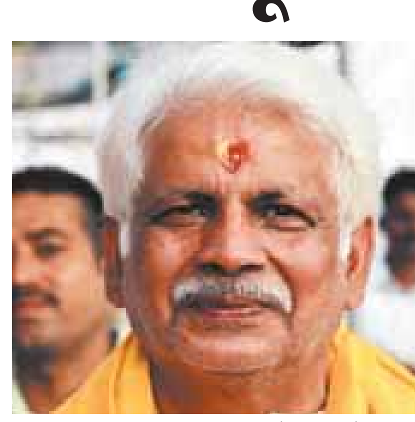

स्थापना मेरे पिता ने की थी और गंगा लैब इसी उद्देश्य से संचालित है। समय समय पर संकट मोचन फाउंडेशन के बैनर तले वाराणसी में मैराथन दौड़ का आयोजन कराना भी युवाओं को गंगा के प्रति आस्था वान बनाना उनका उद्देश्य रहा है। अप्रैल 2024 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उनसे मिलने संकट मोचन मंदिर पहुंचे तो बिना वक्त गंवाए मिश्रजी ने गंगा शुद्धिकरण की बात तथ्यों के साथ की।

संकट मोचन मंदिर के 13 वें महंत के रुप में संकट मोचन संगीत समारोह के 103 वें आयोजन तक उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कराने में महंत विशम्भर नाथ मिश्र ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। हर आयोजन में देश भर से एक दर्जन से अधिक युवा कलाकारों को ढूंढ कर संकट मोचन संगीत समारोह का मंच प्रदान करना उनकी दूरदर्शिता और परिपक्वता को बयां करता है।

महंत विशम्भरनाथ मिश्र की सोच, जिद और निर्मल जीवन शैली के मुरीद उस्ता द राशिद खान ने अपने बेटे अरमान खान की गंडाबंध रस्म में अपने एक मौलवी के साथ महंत विशम्भर नाथ मिश्र को भी पूरे सम्मान के साथ आमंत्रित किया। मिश्रजी ने संकट मोचन संगीत समारोह का राष्ट्र की सीमा से विस्तार करते हुए इसके द्वार पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के कलाकारों के लिये भी खोले। इस की शुरुआत पाकिस्तान के गजल गायक गुलाम अली ने की थी।

अप्रैल 2020 में दुनिया भर पर कोविड 19 का कहर मंडरा रहा था। इसके बावजूद महंतजी ने 97 वां संकट मोचन संगीत समारोह डिजीटली आयोजित किया और इस परंपरा को टूटने नहीं दिया। संगीत समारोह में रात भर जागने के बाद भी वह कॉलेज में अपने विभाग में जाकर छात्रों को पढ़ाने के कोई कोताही नहीं बरतते।

परिवार में पखावज वादन की परंपरा को कायम रखते हुए महंतजी आज भी देश के बड़े-बड़े संगीत उत्सावों में पखावज वादन कर रहे हैं। वे कहते हैं-यह सब अपने बाबा की परंपरा को जीवित रखने का एक प्रयास है। लेकिन इस सहजता के भीतर एक गहरी बात छिपी है-कि परंपरा केवल विरासत नहीं, एक जिम्मेदारी भी होती है। महंत प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र के साहसिक फैसलों की कई बार आलोचना भी हुई परन्तु मिश्रजी का कहना है कि कतिपय लोगों की सुनेंगे तो काम नहीं कर पाएंगे। उन्हें जन्म दिन की हार्दिक बधाई।

फर्जी पत्रकार ने महिलाकर्मी को ब्लैकमेल किया

इंदौर। शहर में फर्जी पत्रकार बनकर महिला कर्मचारी को ब्लैकमेल करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। श्रम विभाग में कार्यरत महिला ने आरोपी की धमकियों से परेशान होकर क्राइम ब्रांच में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद पुलिस ने आरोपी अजीत चौरसिया को गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के अनुसार आरोपी श्रम विभाग कार्यालय पहुंचा और खुद को पत्रकार बताते हुए बीमा योजनाओं की जानकारी देने लगा। बातचीत के दौरान उसने श्रमिकों को लाभ दिलाने का भरोसा दिलाया और विश्वास जीतने के बहाने महिला कर्मचारी को 5 हजार रुपए थमा दिए। इसी दौरान उसने गुप्त रूप से स्पाई कैमरे और मोबाइल से वीडियो रिकॉर्ड कर लिया। कुछ दिन बाद आरोपी ने वीडियो वायरल करने की धमकी देते हुए महिला को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। पहले उसने 50 हजार रुपए मांगे, बाद में रकम बढ़ाकर एक लाख रुपए कर दी। महिला की शिकायत पर क्राइम ब्रांच ने कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

ट्रैवल कारोबारी के घर में घुसकर गुंडागर्दी

इंदौर। हीरा नगर थाना क्षेत्र में ट्रैवल व्यवसायी के घर में घुसकर तोड़फोड़ और हंगामे का मामला सामने आया है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक ट्रैवल व्यवसायी ने शिकायत दर्ज कराई कि कल्पना नगर निवासी आदर्श सोनी उनके घर पहुंचा और वहां जमकर उत्पात मचाया। आरोपी ने घर की खिड़कियों में तोड़फोड़ की और परिवार के लोगों के साथ गाली-गलौज करते हुए धमकियां भी दीं। घटना के दौरान मौजूद लोगों ने इसका वीडियो बना लिया। जांच में सामने आया है कि आरोपी और फरियादी पहले से एक-दूसरे को जानते हैं। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार आदर्श सोनी के खिलाफ पहले से तीन से चार आपराधिक मामले दर्ज हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस की विशेष टीम आरोपी की तलाश में जुटी है। एडिशनल डीसीपी रामसनेही मिश्रा ने बताया कि आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया गया है और जल्द गिरफ्तारी कर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

हाईकोर्ट में नौकरी के नाम पर ठगी

इंदौर। तुकोगंज थाना पुलिस ने हाईकोर्ट में असिस्टेंट क्लर्क की नौकरी दिलाने के नाम पर फर्जीवाड़ा करने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। इस मामले में पुलिस ने एक महिला सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार पीड़ित महिला ने शिकायत दर्ज कराई थी कि उसके परिचित लक्ष्मण मेहरा ने खुद को कोर्ट कर्मचारी बताकर उसे असिस्टेंट क्लर्क की नौकरी दिलाने का झांसा दिया। आरोपी ने नौकरी लगवाने के नाम पर 25 हजार रुपए लिए और फर्जी नियुक्ति पत्र सौंप दिया। जब पीड़िता संबंधित कोर्ट में जॉइनिंग के लिए पहुंची तो दस्तावेज जांच में फर्जी पाए गए, जिसके बाद मामला सामने आया। पुलिस जांच में सामने आया कि इस फर्जी नियुक्ति पत्र को रिंकू चौहान नामक महिला ने तैयार किया था, जो एक साइबर कैफे संचालित करती है। इसके बाद पुलिस ने महिला आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया।

जल संकट के बीच गंदे पानी की आपूर्ति

इंदौर। एक ओर शहर में पानी की किल्लत से लोग परेशान हैं, तो दूसरी ओर कई इलाकों में नलों से गंदे और बदबूदार पानी की आपूर्ति ने लोगों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। विधानसभा क्षेत्र-1 के वार्ड 13 स्थित शुभम नगर में लंबे समय से रहवासी इस गंभीर समस्या से जूझ रहे हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि वे नियमित रूप से जलकर का भुगतान करते हैं, इसके बावजूद उनके घरों तक पीने योग्य पानी के बजाय ड्रेनेज जैसा काला और गंदा पानी पहुंच रहा है। इस वजह से उन्हें मजबूरी में बाजार से पानी खरीदकर गुजारा करना पड़ रहा है। रहवासियों ने क्षेत्र के पार्षद और अन्य जनप्रतिनिधियों पर भी गंभीर लापरवाही के आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि कई बार शिकायत करने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हुआ, जिससे लोगों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। स्थानीय महिलाओं और रहवासियों ने बताया कि यह पानी न तो पीने योग्य है और न ही घरेलू उपयोग के लायक। लगातार गंदे पानी की आपूर्ति से बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है।

राऊ में जल संकट पर राजनीति गरमाई

इंदौर। क्षेत्र में गहराते भीषण जल संकट को लेकर शुक्रवार को राऊ नगर कांग्रेस ने नगर परिषद कार्यालय पर जोरदार धरना-प्रदर्शन किया। जिला कांग्रेस (ग्रामीण) अध्यक्ष विपिन वानखेड़े के नेतृत्व में हुए इस आंदोलन में बड़ी संख्या में एक स्थानीय नागरिक, महिलाएं और कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने पानी की लगातार हो रही किल्लत को लेकर नगर परिषद प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। धरने के दौरान उस समय माहौल गरम हो गया जब नगर परिषद सीएमओ पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। इस पर कांग्रेस नेताओं ने तीखी आपत्ति जताई। विपिन वानखेड़े ने अधिकारियों को घेरते हुए कहा कि क्या पुलिस हमें गोली मार देगी? पानी के संकट पर आप लोग सिर्फ चर्चा करते हो, जनता को पानी नहीं देते। लगातार बढ़ते जल संकट से राऊ क्षेत्र के लोग परेशान हैं और अब आंदोलन और तेज होने के संकेत मिल रहे हैं।

ऑटो में 72 बीयर केन पकड़ी

इंदौर। आबकारी विभाग ने अवैध शराब परिवहन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए देवगुराड़िया रोड पर एक ऑटो रिक्शा से 72 बीयर केन जब्त की हैं। विभाग को सूचना मिली थी कि एक ऑटो रिक्शा में केन बीयर भरकर ले जाई जा रही है। सूचना के बाद उपनिरीक्षक सुनीलकुमार मालवीय ने मालवा मिल और छावनी टीम के साथ घेराबंदी कर ऑटो क्रमांक एमपी-09 आरए 7965 को रोका। तलाशी के दौरान ऑटो की पिछली डिक्की में तीन गत्तों की पेटियां मिलीं, इनमें बोल्ट बियर की केन भरी हुई थीं। गिनती करने पर कुल 72 केन पाई गईं। कार्रवाई के दौरान ऑटो में सवार आरोपी भारत पिता घनश्याम मांडरे को पकड़ा गया। आबकारी विभाग ने शराब की खेप और ऑटो रिक्शा को जब्त कर आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है।

छावनी में बुलडोजर एक्शन, मास्टर प्लान सड़क के लिए अड़चनें ध्वस्त

निगम की बड़ी कार्रवाई, 60 फीट सड़क के लिए अभियान तेज

इंदौर। छावनी क्षेत्र में शुक्रवार सुबह नगर निगम ने मास्टर प्लान के तहत प्रस्तावित सड़क चौड़ीकरण को लेकर अब तक की सबसे बड़ी रिमूवल कार्रवाई शुरू कर दी। मधुमिलन चौराहा से जगन्नाथ धर्मशाला तक चलाए गए अभियान में नगर निगम की रिमूवल गैंग, पुलिस बल और भारी मशीनरी की मौजूदगी में अवैध निर्माणों पर सख्त कार्रवाई की गई। जेसीबी और पोकलेन मशीनों की मदद से 100 से अधिक मकानों और दुकानों के बाधक हिस्सों को हटाया गया,जिससे पूरे क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। नगर निगम अधिकारियों के अनुसार,मास्टर प्लान में पहले इस मार्ग को 80 फीट चौड़ा किया जाना प्रस्तावित था, लेकिन स्थानीय व्यापारियों और रहवासियों के विरोध तथा जनप्रतिनिधियों की सहमति के बाद इसे घटाकर 60 फीट कर दिया गया। इसके बावजूद कई भवन स्वामियों ने निर्धारित समय सीमा में अपने निर्माण नहीं हटाए। इस पर निगम ने अंतिम 24 घंटे का नोटिस जारी किया था,जिसके बाद समय समाप्त होते ही सुबह कार्रवाई शुरू कर दी गई।

सामान हटाने की होड़- कार्रवाई के दौरान जैसे ही मशीनें चली, कई दुकानदार और रहवासी अपने प्रतिष्ठानों की ओर दौड़ पड़े और सामान सुरक्षित करने में जुट गए। पूरे क्षेत्र में पुलिस बल तैनात रहा ताकि किसी भी प्रकार की अव्यवस्था को रोका जा सके।

नगर निगम का कहना है कि शहर के यातायात सुधार और विकास कार्यों को गति देने के लिए यह कार्रवाई आवश्यक थी।

तीन धर्मस्थलों को राहत- अधिकारियों ने बताया कि फिलहाल तीन धार्मिक स्थलों को इस कार्रवाई से बाहर रखा गया है। इनके संबंध में जिला प्रशासन को पत्र भेजकर आपसी सहमति से निर्णय लेने का अनुरोध किया गया है। इससे पहले जिंसी क्षेत्र में भी इसी तरह की कार्रवाई में 17 मकानों के हिस्से हटाए गए थे। लगातार दूसरे दिन चल रही इस सख्त कार्रवाई से पूरे शहर में हलचल बनी हुई है।

वृद्धों की समस्याओं के निराकरण के लिए 25 मई को कलेक्ट्रेट में शिविर

भरण-पोषण, विवाद, पेंशन, स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान

इंदौर। वृद्धों की समस्याओं के त्वरित निराकरण और उन्हें एक ही स्थान पर विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 25 मई को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में विशेष शिविर आयोजित किया जाएगा। यह शिविर जनसुनवाई के दौरान वृद्धजनों से लगातार प्राप्त हो रही समस्याओं के मद्देनजर आयोजित किया जा रहा है। शिविर सुबह 11 बजे से प्रारंभ होगा। कलेक्टर शिवम वर्मा ने कलेक्टर कार्यालय में शिविर की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने शिविर स्थल का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए तथा कहा कि वृद्धजनों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए सभी जरूरी व्यवस्थाएं समय पर सुनिश्चित की जाएं। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि शिविर का आयोजन प्रभावी, सुव्यवस्थित एवं परिणाम मूलक हो तथा अधिक से अधिक वृद्धजन इसका लाभ प्राप्त कर सकें, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि शिविर में सभी एसडीएम अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें।

उपेक्षा और स्वास्थ्य समस्याएं - जनसुनवाई में बड़ी संख्या में वृद्धजन अपनी समस्याएं लेकर पहुंचते हैं, जिनमें पारिवारिक विवाद, भरण-पोषण संबंधी प्रकरण, सामाजिक उपेक्षा, पेंशन और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं प्रमुख रूप से सामने आती हैं। इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए विशेष

फोकस के साथ यह शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर में भरण-पोषण अधिनियम के तहत आने वाले मामलों का निराकरण किया जाएगा। साथ ही यदि किसी वृद्धजन का पारिवारिक विवाद मध्यस्थता के माध्यम से समझाया जा सकता है, तो उसके लिए भी विशेष व्यवस्था की जाएगी।

परिवार को भी बुलाने की कोशिश- प्रशासन का प्रयास रहेगा कि संबंधित परिवारजनों और बच्चों को भी बुलाया जाए, ताकि माता-पिता के सम्मान और सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए सौहार्दपूर्ण समाधान निकाला जा सके। विशेष शिविर में वृद्धजनों की पेंशन संबंधी समस्याओं के निराकरण के साथ स्वास्थ्य परीक्षण हेतु हेल्थ कैंप भी लगाया जाएगा। प्रशासन का उद्देश्य है कि वृद्धजनों को एक ही छत के नीचे विभिन्न योजनाओं और सुविधाओं का लाभ उपलब्ध कराया जा सके।

हनीट्रैप-2: भाजपा मोर्चा की पूर्व नगर अध्यक्ष रेशु गिरफ्तार, कई राज खुले

पुलिस की जांच में प्रभावशाली लोगों के नाम सामने आने की आशंका

इंदौर। चर्चित हनीट्रैप-2 मामले में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए सागर निवासी रेशु उर्फ अभिलाषा और इंदौर पुलिस की गुप्त शाखा में पदस्थ प्रधान आरक्षक विनोद शर्मा को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों की गिरफ्तारी शराब कारोबारी चिंटू ठाकुर को धमकाने और दबाव बनाने से जुड़े मामले में हुई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए दिल्ली से खुफिया ब्यूरो के अधिकारियों ने भी इंदौर पुलिस से पूरे प्रकरण की जानकारी जुटाई है। गिरफ्तारी के बाद दोनों आरोपियों को मजिस्ट्रेट के बंगले पर पेश किया गया, जहां से अदालत ने उन्हें 25 मई तक पुलिस रिमांड पर भेज दिया। जांच एजेंसियों को रेशु के दिल्ली में एक केंद्रीय राज्य मंत्री से करीबी संबंधों की जानकारी भी मिली है, जिसके बाद मामले को लेकर राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में हलचल तेज हो गई है।

जांच एजेंसियां परतें खोलने में जुटी

सूत्रों के मुताबिक, इस पूरे नेटवर्क में कई नेता, अधिकारी और बड़े कारोबारी जुड़े हो सकते हैं। पुलिस अब मोबाइल रिकॉर्ड, संपर्क सूत्रों और आर्थिक लेन-देन की जानकारी खंगाल रही है। अब

तक इस मामले में कथित महिला तस्कर अलका दीक्षित, लाखन चौधरी, जयदीप, जितेंद्र पुरोहित और इस पूरे गिरोह की मुख्य संचालक बताई जा रही श्वेता जैन समेत कई लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। जांच में यह भी सामने आया है कि भोपाल के चर्चित हनी ट्रैप-1 मामले की मुख्य आरोपी श्वेता जैन के साथ मिलकर रेशु उर्फ अभिलाषा लंबे समय से कई प्रभावशाली लोगों के संपर्क में थी। बताया जा रहा है कि उसका नेटवर्क सागर, भोपाल, उज्जैन, इंदौर से लेकर दिल्ली तक फैला हुआ था।

विधानसभा चुनाव लड़ने की तैयारी

रेशु ने विधानसभा चुनाव लड़ने की तैयारी भी शुरू कर दी थी। चर्चा रही कि भोपाल के एक बड़े भाजपा नेता के संपर्क में आने के बाद उसने नरयावली विधानसभा सीट से चुनाव लड़ने की रणनीति बनाई थी। उसने क्षेत्र में अपने बड़े-बड़े होर्डिंग भी लगवाए थे, जिससे उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा खुलकर सामने आई थी। हालांकि वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने प्रदीप लारिया को प्रत्याशी घोषित कर दिया, जिसके बाद उसकी चुनावी योजना पूरी नहीं हो सकी।

राजनीति में सक्रियता, प्रभाव

रेशु उर्फ अभिलाषा सागर में भाजपा के अनुसूचित जाति-जनजाति मोर्चा की नगर अध्यक्ष भी रह चुकी है। वह मूल रूप से सागर के मकरोनिया क्षेत्र की रहने वाली है। जानकारी के अनुसार पढ़ाई के लिए वह ओमान गई थी, जहां उसकी मुलाकात एक कारोबारी से हुई और बाद में दोनों ने विवाह कर लिया। कुछ समय बाद दोनों का तलाक हो गया और वह भारत लौट आई। भारत लौटने के बाद उसने राजनीति और सामाजिक गतिविधियों में सक्रियता बढ़ाई। सागर में उसने संघ लोक सेवा आयोग की तैयारी कराने के नाम पर एक कोचिंग संस्थान भी शुरू किया था। इस दौरान उस पर कुछ लोगों से धोखाधड़ी करने के आरोप भी लगे थे।

विधायक से नजदीकियां चर्चा में

सागर के एक विधायक से नजदीकियों को लेकर भी रेशु लंबे समय तक चर्चा में रही थी। बताया जाता है कि विधायक की पत्नी और परिवार के लोगों ने सार्वजनिक रूप से उसे फटकार भी लगाई थी। इसके बाद उसका संपर्क मकरोनिया क्षेत्र के कुछ संदिग्ध और आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों से बढ़ गया। कोविड काल के दौरान वह कई भाजपा नेताओं और एक विधायक के साथ सामाजिक गतिविधियों में दिखाई देती रही। उस समय उसकी तस्वीरें और वीडियो इंटरनेट माध्यमों पर काफी प्रसारित हुए थे। इन्हीं घटनाओं के बाद उसकी राजनीतिक पहुंच और प्रभाव को लेकर चर्चाएं तेज हो गई थीं।

भीषण गर्मी में जल संकट रोकने के लिए निगम अलर्ट, अमला चौकस

कंट्रोल रूम पहुंचकर महापौर-आयुक्त ने परखी व्यवस्था

इंदौर। भीषण गर्मी और लगातार बढ़ते तापमान के बीच शहरवासियों को निर्बाध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए नगर निगम ने निगरानी बढ़ा दी है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव और आयुक्त क्षितिज सिंघल ने बिजलपुर नर्मदा कंट्रोल रूम का निरीक्षण कर जल वितरण व्यवस्था की समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने नर्मदा और विभिन्न जलाशयों से हो रही सप्लाई,पानी के प्रेशर,टंकियों की भराव क्षमता और शिकायत निराकरण व्यवस्था की जानकारी दी। महापौर ने निर्देश दिए कि किसी भी क्षेत्र में पेयजल समस्या आने पर तत्काल समाधान किया जाए और जरूरत पड़ने पर वैकल्पिक व्यवस्था भी उपलब्ध कराई जाए। आयुक्त ने सभी जोनों की नियमित मॉनिटरिंग और तकनीकी खराबी होने पर तत्काल सुधार के निर्देश दिए।

'नो व्हीकल डे' का संदेश

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर शहर में प्रत्येक शुक्रवार 'नो व्हीकल डे' के रूप में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत वे लगातार टू-व्हीलर से शहर का दौरा कर रहे हैं। वहीं आयुक्त क्षितिज सिंघल ने गांधी हॉल परिसर स्थित फायर स्टेशन का भी औचक निरीक्षण किया। उन्होंने फायर वाहनों, उपकरणों और कर्मचारियों की उपस्थिति की जांच कर सभी संसाधन हर समय कार्यशील रखने के निर्देश दिए। आयुक्त ने कहा कि गर्मी में आगजनी की घटनाएं बढ़ने की आशंका रहती है, इसलिए फायर अमला अलर्ट मोड पर रहकर किसी भी सूचना पर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करे।

मंडल रेल प्रबंधक ने 42 रेलकर्मी 'रेल सेवा पुरस्कार' से सम्मानित

सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र, मेमेंटो के साथ जामुन का पौधा

इंदौर। रतलाम मंडल के विभिन्न विभागों में कार्यरत रेल कर्मचारियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन को मान्यता देते हुए 22 मई को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, रतलाम के एनेक्सी हॉल में %रेल सेवा पुरस्कार-2025% कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल रेल प्रबंधक अश्वनी कुमार एवं अन्य अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुई।

मंडल के कलाकारों द्वारा एक संक्षिप्त सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक कुमार ने कहा कि रतलाम मंडल के जिन 42 रेल कर्मियों को सम्मानित किया जा रहा, उन्होंने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। किसी ने संरक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य किया है, तो किसी ने परिचालन में दक्षता लाई है; कुछ कर्मचारियों ने यात्री सुविधाओं में सुधार किया, वहीं अन्य ने राजस्व वृद्धि में विशेष

योगदान दिया। यह पुरस्कार केवल एक व्यक्ति का नहीं बल्कि उस टीम का भी है, जिसके साथ मिलकर उन्होंने यह कार्य किया है। इसलिए मैं आज समस्त टीम को भी इस सम्मान का भागीदार मानता हूँ। इस अवसर पर इंजीनियरिंग, परिचालन, वाणिज्य, यांत्रिक (डिजल सहित), रेलवे सुरक्षा बल, सिग्नल एवं दूरसंचार, कार्मिक, चिकित्सा, स्टोर, विद्युत, मान्य प्रशासन तथा मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक ने कुल 42 कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र एवं मेमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस वर्ष कार्यक्रम में एक विशेष नवाचार करते हुए पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने हेतु प्रत्येक पुरस्कार प्राप्तकर्ता को जामुन का एक पौधा भी भेंट स्वरूप दिया गया।

इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) अक्षय कुमार, अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) कुंजीलाल मीणा पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा डॉ अर्चना शर्मा एवं संगठन की अन्य सदस्य, मंडल के सभी शाखाधिकारी, अधिकारी एवं सम्मानित कर्मचारी उपस्थित रहे।

पानी संकट के बीच निगम के टैंकर को पानी बेचते पकड़ा, 25 हजार रु जुर्माना

निगमायुक्त ने मौके पर कराई कार्रवाई, शिकायती स्टीकर भी नहीं

इंदौर। शहर में जहां एक ओर लोग पानी के लिए परेशान होकर इधर-उधर भटक रहे हैं, वहीं दूसरी ओर नगर निगम का ही टैंकर पैसे लेकर पानी बेचते हुए पकड़ा गया। गुरुवार शाम निगमायुक्त क्षितिज सिंघल ने निरीक्षण के दौरान इस पूरे मामले का खुलासा किया। शिकायत सही पाए जाने पर उन्होंने तत्काल कार्रवाई करते हुए टैंकर जब्त कराया और संबंधित एजेंसी पर 25 हजार रुपए का जुर्माना लगाया। जानकारी के अनुसार मामला रानी सती गेट क्षेत्र का है। गुरुवार शाम करीब साढ़े पांच बजे निगमायुक्त क्षेत्र के निरीक्षण पर निकले थे। इसी दौरान उनकी नजर एक ट्रैक्टर टैंकर पर पड़ी, जिसका क्रमांक एमपी-09 एबी-0932 था। टैंकर पर नगर निगम की ओर से लगाए जाने वाले शिकायत संबंधी स्टीकर भी नहीं लगे थे, जिससे उन्हें संदेह हुआ।

दो टैंकरों पर कार्रवाई

इसी दिन सुबह लसूड़िया मोरी क्षेत्र में भी निगम प्रशासन ने दो अन्य टैंकरों पर कार्रवाई की। निरीक्षण के दौरान इन टैंकरों पर वाहन क्रमांक और शिकायत संबंधी स्टीकर नहीं पाए गए। इसे नियमों का उल्लंघन मानते हुए निगमायुक्त ने संबंधित एजेंसी साई कृपा इंटरप्राइजेज पर 10-10 हजार रुपए का जुर्माना लगाने के निर्देश दिए। नगर निगम के अधिकारियों के मुताबिक शहर में पानी वितरण व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के लिए सभी टैंकरों पर पहचान और शिकायत संबंधी जानकारी प्रदर्शित करना अनिवार्य है। इसके बावजूद कई टैंकर बिना निर्धारित जानकारी के संचालित किए जा रहे हैं।

टैंकर जब्त करने के निर्देश- निगमायुक्त ने पार्श्वनाथ जैन कॉलोनी के रहवासियों से बातचीत की तो लोगों ने बताया कि टैंकर चालक पानी देने के बदले पैसे मांग रहा था। रहवासियों का आरोप था कि नगर निगम का टैंकर निजी बताकर लोगों से रुपए लेकर पानी सप्लाई किया जा रहा था। शिकायत सुनते ही निगमायुक्त ने मौके पर चालक को फटकार लगाई और तत्काल टैंकर जब्त करने के निर्देश दिए। इसके बाद टैंकर को नगर निगम की कार्यशाला भिजवाया गया। साथ ही टैंकर संचालन से जुड़ी एजेंसी आशा इंटरप्राइजेज पर 25 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया। निगम प्रशासन का कहना है कि शहर में पानी संकट के समय इस तरह की लापरवाही और अनियमितता किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पानी बेचने के आरोप

शहर में सरकारी टैंकरों से पानी बेचने की शिकायत लंबे समय से सामने आती रही हैं। कई इलाकों के रहवासी आरोप लगाते रहे हैं कि पानी सप्लाई के नाम पर लोगों से अवैध वसूली की जाती है। नगर निगम की टंकियों से पानी वितरण और टैंकर संचालन की जिम्मेदारी इंजीनियरों, पार्षदों और जनप्रतिनिधियों के भरोसे चल रही है, जिसके कारण व्यवस्था पर लगातार सवाल उठते रहे हैं। पानी संकट के बीच सामने आए इस मामले ने नगर निगम की निगरानी व्यवस्था पर भी प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं। अब देखना होगा कि निगम प्रशासन आगे ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए क्या ठोस कदम उठाता है।

पुस्तक समीक्षा

संध्या नवोदिता

सलाम लुई पाश्चर: विज्ञान के लालित्य में डुबोती कविताएं

लेखकीय कर्तव्य को नियमित निभाने के साथ ही कविताओं में शुरू ही उनका दखल है। उनका लेखन सोद्देश्य और सार्थक होता है. और लीक से हटकर भी। उनका यह संकलन 'सलाम लुई पाश्चर' अब सामने आया है। ये विज्ञान कविताएं हैं। विज्ञान कविताएं पूरे देश और खासकर हिंदी में ना के बराबर है। विज्ञान बहुत तार्किक विषय है और कविताएं भावुक प्रकृति की मानी जाती हैं। सुधीर सक्सेना ने दोनों का विलय कर दिया है। तर्क और भावना दोनों साथ साथ चल रहे हैं। यह मेल देखना दिलचस्प है।

पुस्तक के शुरू में उन्होंने एक लंबी भूमिका लिखी है, जिसमें उन्होंने तमाम भारतीय वैज्ञानिकों का परिचय दिया है, मुझे आश्चर्य हुआ कि उनकी नजर विज्ञान पर ही नहीं है, बल्कि वैज्ञानिकों के जीवन का भी उनका सुंदर अध्ययन है। इस पुस्तक को पढ़कर आप भारत में विज्ञान की यात्रा के बारे में भी जान सकते हैं। और सरकारों का क्या रुख रहा है इस पर भी एक साफ समझ बन सकती है। इस पुस्तक को पढ़ते हुए आप विज्ञान के लालित्य में डूबना शुरू कर देते हैं। विज्ञान की तथाकथित नीरसता जैसे कहीं और चली जाती है और आप चांद तारों और अद्भुत प्रयोगों की एक बहुत सुंदर दुनिया में दाखिल हो जाते हैं।

शुक्रिया हेली नाम की उनकी एक कविता है-

आओ तारों
हम शुक्रिया अदा करें
एडमंड हेली का
कि उसने तुम्हें गति में पकड़ा
धूमकेतुओं
शुक्रिया अदा करो
एडमंड हेली का
कि उसने तुम्हें गलियों में पढ़ा
और लिखी आला दर्जे की किताब
सागरों महासागरों
धन्यवाद ज्ञापित करो
एडमंड हेली का
कि उसने डाल दी समुद्र विज्ञान की नींव
और लंबी लंबी यात्राएं कीं समुंदरों की.

विज्ञान कविताएं लिखकर सुधीर सक्सेना ने विज्ञान का कर्ज अदा कर दिया। आगरा कॉलेज से उन्होंने विज्ञान से स्नातक किया है। बाद में पत्रकारिता में आकर भी वह विज्ञान को कभी भूले नहीं। उन्होंने डार्विन, लैमार्क, मेंडेल और ह्युगो डी ब्रीज़ को खूब पढ़ा। कार्ल वॉन लिने यानी कैरोलस लीनियस की द्विनाम पद्धति याद की। कितनी ही वनस्पतियों के नाम उन्होंने कंठस्थ किए। बचपन में देखा गया ध्रुवतारा, सप्तऋषि और तारों भरा आकाश उनके सपनों में बस गए।

इस किताब की भूमिका बहुत सुंदर है जिसमें सुधीर सक्सेना अपनी कविताओं की पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए अपने बचपन का ज़िक्र करते हैं। उनकी मां आर्य समाजी थीं और पिता सनातनी। यानी दोनों अलग-अलग ध्रुव। विचार में मां का प्रभाव उन पर ज्यादा पड़ा।

एक बहुत दिलचस्प कविता देखिए-

क्या करता दमित्री इवानोविच?
अगर मेंडेलीफ़ से करने को कहा जाता
मनुष्यों का वर्गीकरण
तो कैसी होती उसकी आवर्त तालिका

इसी तरह एक कविता है-

सलाम लॉर्ड रदरफोर्ड!
अगर प्रयोग धर्मिता परंपरा है
तो उसमें तुम दूसरे पायदान पर हो
माइकल फैराडे के बाद अर्नेस्ट रदरफोर्ड
रसायन और भौतिकी में यक्सां दखल
अलबत्ता जनक तुम नाभिकीय भौतिकी के।

ऐसी कविताएं तभी लिखना संभव है जब आपने वैज्ञानिकों के जीवन को डूबकर महसूस किया हो। यह कविताएं पढ़ने के बाद मैं मैडम क्यूरी को ढूंढना चाह रही हूं कि कवि ने उन को किस तरह देखा है।

मैडम क्यूरी मुझे मिल नहीं रही शायद उन पर लिखना अभी बाकी है। मैं उनकी एक अन्य कविता पढ़ रही हूँ -

भरोसा
जो तत्व
मेंडलीफ की तालिका में नहीं है
वे भी हैं कहीं ना कहीं
इस दुनिया में
एक दिन उन्हें खोज ही लेगा

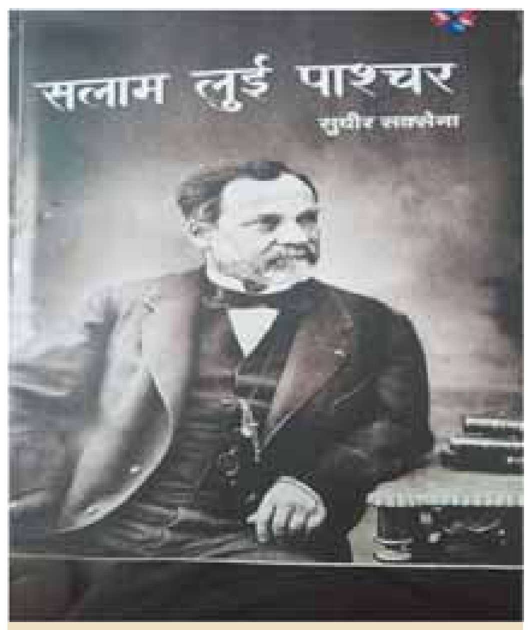

सुधीर सक्सेना का व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे पत्रकार हैं, यात्रा संस्मरण उन्होंने खूब लिखे हैं। आदिवासियों पर उनकी एक बहुत शानदार किताब है, बहुत सक्रिय जीवन जीते हैं और लगातार लिखते हैं।

कोई ना कोई वैज्ञानिक।
जो सुख
आज नहीं है कहीं भी हमारी जिंदगी में
वह सुख
हम नहीं तो हमारी संततियाँ
तलाश ही लेंगी एक न एक दिन
इसी दुनिया में।

विज्ञान कविताओं के साथ ये समाज विज्ञान की कविताएं भी हैं। विज्ञान के प्रतीकों की आँख से समाज को देखा गया है। कई बार इस तरह वे राजनीति को भी समझते हैं। सच कहें तो विज्ञान, राजनीति और समाज पढ़ाई के लिए भले अलग-अलग शाखाएं हो लेकिन जिंदगी के लिए यह सब एक ही हैं।

अम्ल और क्षार
बस्तर के किसी
माड़िया, मुरिया या अबूझमाड़िया से पूछो
तो वह नहीं बता पाएगा
चपोड़ा में मौजूद अम्ल का नाम
और तो और
कोई करजाई नहीं बता पाएगा
खुरासानी इमली में उपस्थित अम्ल के हिज्जे।

यह पुस्तक विज्ञान खोजों और वैज्ञानिकों के प्रति प्रेम पैदा करती है। हम वैज्ञानिक खोजों के बारे में जानते हैं। लेकिन वैज्ञानिकों के निजी जीवन के बारे में कितना कम जानते हैं। कविताओं की यह किताब विज्ञान को सरस नजरिए से देखना सिखाती है। हमें तरल बनाती है। रूखे माने जाने वाले वैज्ञानिकों के जीवन में उत्सुकता पैदा करती है।

यह पुस्तक विज्ञान, दर्शन और कला का सुंदर जोड़ है। आज की दुनिया सुख-सुविधाओं से भरी है। जो विज्ञान की खोजों से ही संभव हुआ है.। आज तकनीक के बिना पत्ता तक नहीं मिलता. सुबह से लेकर शाम तक हम तकनीक के गुलाम बने बैठे रहते हैं।

अच्छा, जिस दूध का हम अपने घरों में इस्तेमाल करते हैं, उसे पाश्चराइज्ड करना सिखाने वाले लुई पाश्चर पर एक कविता जरूर पढ़िए। इन्हीं के नाम पर किताब का नाम सलाम लुई पाश्चर है। उन्होंने पाश्चराइजेशन के अलावा कई अन्य खोजें भी की हैं जिनके बारे में हम बहुत कम जानते हैं-

बहुत पेचीदा है सवाल
कि हम उसे किस लिए करें याद
याद करें बैक्टीरियोलॉजी के लिए
या माइक्रोबायोलॉजी के लिए
या किण्वयन के लिए
अथवा पाश्चुरीकरण के लिए
याद करें
उस विज्ञान के पुरोधा को कैसे?
याद करें
दूध के आस्वाद के लिए
बीयर के झाग से छलकते मगों के साथ
अथवा सुस्वादु वाइन के जाम टकराते हुए
वैज्ञानिक औषधियों के युग आरंभ के लिए
या निरोग भविष्य के स्वप्न दृष्टा इल्म के लिए या
एंथ्रेक्स और रेबीज के टीके के निर्माण के लिए

विज्ञान कविताओं की पुस्तक की भूमिका लिखना भी आसान नहीं था। विश्व रंग से जुड़े कुलाधिपति संतोष चौबे ने इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया है। उनकी भूमिका भी सरस विज्ञान का एक सुंदर लेख बन गई है।

विज्ञान कविताओं का यह संकलन सत्य की खोज और प्रयोगधर्मी महात्मा गांधी को समर्पित है। गांधी सुधीर सक्सेना को बहुत प्रिय हैं। गांधी आइंस्टीन को भी बहुत प्रिय हैं। जिन्होंने उनके बारे में कहा था कि आने वाली पीढ़ियां शायद ही यकीन करेंगे कि इस दुनिया में हाड़-मांस का ऐसा भी पुतला हुआ था।

एक अंतिम कविता से मैं आपको इस संकलन के साथ छोड़ना चाहती हूँ -

दुनिया में
इतने अम्ल हैं
की अम्लीय हो गई है दुनिया
अम्ल बेहिसाब
इतनी तेज
कि उर्दू जुबां में तेजाब

कविताओं की यह किताब विज्ञान की खोजी गई सुंदर दुनिया और अब तक ना खोजी गई रहस्यमयी दुनिया में ले जाने के लिए आपकी उंगली पकड़ना चाहती है।

पुस्तक छपाई के दृष्टिकोण से उत्तम है, प्रूफ की गलती नहीं मिलती, पेज क्वालिटी और फॉन्ट बहुत सुन्दर है। कविता के साथ उससे संबंधित वैज्ञानिक की तस्वीर पुस्तक का अतिरिक्त आकर्षण है।

सलाम लुई पाश्चर : सुधीर सक्सेना
(कविता संग्रह)
आइसेक्ट पब्लिकेशन भोपाल
प्रथम संस्करण 2022
मूल्य 250

कविता

अगर बन सकूँ...

मोहन वर्मा

अगर बन सकूँ तो बनना चाहता हूं
नीम का पेड़
जिसकी पत्तियाँ - बावजूद तमाम कड़वाहट के
करती है समूचा रक्त शुद्ध ।।
अगर बन सकूँ तो बनना चाहता हूं
सुई किसी चिकित्सक की
जो बावजूद क्षणिक दर्द के
करती है काया को निरोग ।।
अगर बन सकूँ तो बनना चाहता हूं
पासंगरहित तराजू
जो तौल सके ठीक ठीक
और कर सके- दिये गये मूल्य का सही हक अदा ।।
अगर बन सकूँ तो बनना चाहता हूं
मुस्कराहट किसी मासूम की
जो बदलते माहौल में भी
जिलाये है-एक खुशनुमा उम्मीद....।

ग़ज़ल

टूटे हुए लगते

कमलेश कुमार दीवान

कुछ लोग जुड़े रहकर टूटे हुए लगते
कुछ पास में होते पर छूटे हुए लगते।

दुनिया में सभी रिश्ते कैसे बने रहते
सच है कि यहां लोग झूठे हुए लगते।

कुछ ओढ़कर बैठे हैं अमीरी के लबादे
जब झांककर देखा तो लूटे हुए लगते।

तन कर खड़े रहें हैं जैसे कि एक बांस
भीतर से खाली खोखे फूंके हुए लगते

दीपक जले हैं फिर भी अंधेरा बड़ा घना
जलते चिराग फिर क्यों बुझे हुए लगते।

मुद्दत हुई जमीं पर कोई आया न रहनुमा
'दीवान' तुम बता दो वो रूठे हुए लगते।

जलती हुई बाती

कहानी

रविकान्त राऊत

मध्यप्रदेश के एक छोटे-से कस्बे में – जहाँ शाम को अज़ान और मंदिर की घंटी एक साथ सुनाई देती है – वहाँ की एक गली में सुधीर और मालती का घर था। पक्की दीवारें, आँगन में तुलसी का चौरा, रसोई में हमेशा कुछ न कुछ पकने की महक। बाहर से देखने पर – एक सम्पूर्ण घर।

लेकिन भीतर?

भीतर कुछ और था।

सुधीर हर शाम दफ़्तर से लौटता। दरवाज़े पर चप्पल उतारता। मालती रसोई में होती। दोनों के बीच कुछ शब्द होते – खाना कब होगा, बच्चों ने पढ़ा कि नहीं, बिजली का बिल आया क्या। बस इतना।

न झगड़ा। न रोना। न कोई बड़ा उपद्रव।

बस एक चुप्पी – जो दीवारों में रच-बस गई थी।

सुधीर रात को खाने की थाली लेकर बैठता। मालती सामने बैठती। और सुधीर को लगता – जैसे कोई अजनबी सामने बैठा हो। वही चेहरा, वही आँखें – लेकिन भीतर से कुछ था जो उसे वहाँ रहने नहीं देता था। वह अकारण उठकर पानी लेने चला जाता। या अख़बार उठा लेता। या खाँसने का नाटक करके उठ जाता।

मालती देखती थी। कुछ नहीं कहती थी।

ऐसा नहीं था कि शुरू से यही था।

बारह साल पहले – जब ब्याह हुआ था – सुधीर घंटों मालती से बातें करता था। बरसात की रात को छत पर जाकर दोनों चाय पीते थे। मालती जब हँसती थी तो सुधीर को लगता था – यही सबसे बड़ी दौलत है।

फिर क्या हुआ?

कुछ नहीं हुआ – और यही सबसे बड़ी त्रासदी थी। एक दिन सुधीर ने नौकरी में तरक्की की बात घर आकर बताई। मालती उस वक्त बच्चे को बुखार में देख रही थी। उसने सिर उठाया, कहा – अच्छा। और वापस बच्चे की तरफ़ मुड़ गई।

सुधीर के भीतर कुछ सिकुड़ गया। उसने सोचा – जाने दो।

फिर एक बार मालती ने अपनी माँ के घर जाने की बात कही। सुधीर ने कहा – अभी नहीं, त्योहार के बाद। मालती चुप हो गई। भीतर से कुछ बंद हो गया। उसने भी सोचा – जाने दो।

यही जाने दो – दोनों के भीतर इकट्ठा होता रहा। वर्षों तक। परत दर परत।

और फिर एक रात ऐसी आई।

दीपावली की रात थी। पूरा मोहल्ला जगमगा रहा था। बच्चे आँगन में पटाखे छोड़ रहे थे। मालती ने आँगन में दिये जलाए थे। तुलसी के चौरे के पास, दरवाज़े पर, खिड़की की मुंडेर पर।

सुधीर बाहर से लौटा। आँगन में मालती को दिये जलाते देखा।

और उस एक क्षण में – पता नहीं क्यों – उसने मालती का चेहरा ध्यान से देखा।

दीये की लौ में वह चेहरा काँप रहा था। माथे पर पसीने की एक बूँद थी। होंठ कुछ गुनगुना रहे थे – शायद कोई श्लोक। आँखों में वह एकाग्रता थी जो केवल तब आती है जब कोई किसी काम में पूरी तरह डूबा हो।

सुधीर वहीं रुक गया।

उसने कुछ कहा नहीं। कुछ पूछा नहीं।

बस देखता रहा।

बीस क्षण। तीस क्षण।

और उस देखने में – न कोई पुरानी शिकायत थी, न कोई हिसाब – अचानक उसे कुछ याद आया। यह वही मालती थी जो बरसात की रात छत पर चाय लेकर आती थी। यह वही थी।

भीतर कहीं कुछ पिघला।

बहुत धीरे। जैसे जाड़े की धूप में बर्फ पिघलती है। मालती ने आँख उठाई। सुधीर को खड़े देखा।

कब आए? उसने पूछा।

अभी। सुधीर ने कहा।

एक पल रुककर उसने कहा – एक दिया मुझे भी जलाने दो।

मालती ने बिना कुछ कहे माचिस की डिबिया उसकी तरफ़ बढ़ा दी।

सुधीर बैठ गया। एक दिया उठाया। काँपती बाती को थामा।

दोनों वहाँ बैठे रहे। आँगन में। मिट्टी के दियों के बीच।

कोई बड़ी बात नहीं हुई। कोई माफ़ी नहीं माँगी गई। कोई पुराना हिसाब नहीं खुला।

बस दो लोग – एक आँगन में – दिये जलाते हुए।

रिश्ते बड़े झगड़ों से नहीं टूटते।

वे उन हज़ार छोटे क्षणों से टूटते हैं जब हम सामने वाले को देखना बंद कर देते हैं।

और शायद वे उसी तरह जुड़ते भी हैं –

एक आँगन में, एक काँपती बाती को थामने से।

नौटंकी एक पारंपरिक कला है

व्यंग्य

सुरेश सौरभ

लेखक व्यंग्यकार हैं।

यह मेरे पूर्व जन्म के संस्कार थे कि पैदा होते ही मेरे अंदर साइकिल के प्रति असीम मोह पैदा हो गया। बचपन से ही मैं साइकिल चला रहा हूँ। अगर कुल जोड़कर समय बताऊं तो चालीस साल से अधिक वर्ष हो चुके होंगे मुझे साइकिल के पॉयडलों पर पैर मारते-मारते। वह युग ऐसा था कि आजकल की तरह हर पल को यादगार बनाने के लिए सेल्फियाने वाली सरल सुविधा उपलब्ध न थी। लिहाजा मेरे पास बचपन के या किशोरावस्था के साइकिल चलाते हुए या दनदनाते साइकिल जोतते हुए, कोई फोटो किसी फाइल में मौजूद नहीं है। जवानी काल में भी साइकिल चलाते हुए फोटो खिंचवाने की खुजली न पैदा हुई। अतः जवानी में भी साइकिल खींचते हुए कोई फोटू मेरे फोन की मेमोरी में कैद नहीं है।

मैंने देखा है, कुछ अमीर लोग विश्व साइकिल दिवस पर अपने पार्क में साइकिल चलाते हुए, अपनी फोटू खिंचवा कर सोशल मीडिया में चेपते हुए, अपने पैदाइशी पर्यावरण प्रेमी होने का दावा ठोंकते रहते हैं और उनके प्रामाणित दावे को पढ़े-लिखे अमीर लोग भी पूर्ण प्रामाणिक मान लेते हैं। क्योंकि हर अमीर ,दूसरे अमीर की हर बात को कृत संकल्पित होकर सही प्रामाणित मानते रहे, ऐसी विधाता ने जगत में विधियाँ कायदे रच रखी हैं। मैं आज देख रहा हूं, कुछ देशों के आपसी द्वंद्व युद्ध के कारण तेल की आपूर्ति व्यवस्थित दशा दिशा में नहीं हो पा रही है। तेल संकट पर चिंतित नेता मंत्री अधिकारी कहीं साइकिल से आफिस आ रहें हैं, कहीं ,ई-रिक्शा से मीटिंग में जा रहे हैं और खुद पर्यावरण प्रेमी, देश भक्त साबित कर रहे हैं। मीडिया में उनके फोटो वीडियो पर खूब चर्चा हो रही है, कुछ तो उन्हें देश का सच्चा राष्ट्रभक्त तक घोषित कर रहे हैं। सवाल यह है कि मेरे जैसे आम इंसान किससे अपने फोटो खिंचवाएं, किससे वीडियो बनवाएं, साइकिल चलाते हुए या ई-रिक्शे पर जाते हुए। पर मेरी समझ में यह नहीं आता है कि जो नेता ,मंत्री ,अधिकारी एक दिन पब्लिक ट्रांसपोर्ट या साइकिल, ई-रिक्शा का प्रयोग करते हैं, वह अगले दिन प्लेन में सफर कैसे करने लगते हैं,अगले दिन अपनी महंगी गाड़ी में सफर कैसे करने लगते हैं, लोग तो यही कहते हैं कि पारंपरिक नौटंकी एक लोककला ,जिसमें आजकल ,नेता मंत्री ,अधिकारी पारंगत होकर पब्लिक का भरपूर मनोरंजन कर रहे हैं।

वेब सीरीज समीक्षा

रणदीप हुड्डा के ज़ानदार अभिनय से सजी वेब सीरीज़

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।)

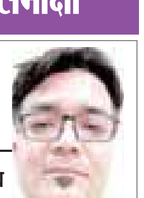

यह सिरीज 1990 के दशक के उत्तर प्रदेश की हिंसा, गैंगवार और पुलिस राजनीति पर केन्द्रित है ।यह सिरीज अपराध, राजनीति और निज़ी संघर्षों का एक ऐसा मेल है, जो दर्शकों को कुर्सी से बाँधे रखता है । दस एपीसोड की इस सिरीज में एनकाउंटर स्पेशलिस्ट अविनाश मिश्रा के उसी बेखौफ अंदाज को आगे बढ़ाया गया है, जिसे रणदीप हुड्डा ने अपने दमदार अभिनय से फिर जान फूँक दी है । कॉप ड्रामा में अक्सर दिखाई जाने वाली कुछ घिसी-पिटी बातें यहाँ भी मौज़ूद हैं, लेकिन कलाकारों की अभिंत क्षमता और कहानी में आने वाले जज्बाती मोड़ इसे एक बार देखने लायक जरूर बनाते हैं । सस्पेंस और एक्शन के शौकीनों के लिए यह सीजन काफी मसालेदार साबित होने वाला है.

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर उत्तर प्रदेश के अपराध जगत और पुलिस व्यवस्था पर आधारित कहानियों पर कई फिल्में और वेबसिरीज़ बनीं हैं । इसी क्रम में ' मिर्जापुर ' और ' पाताल लोक ' जैसी सीरीज के बाद अब निर्देशक नीरज पाठक की ' इंस्पेक्टर अविनाश टू ' दर्शकों के बीच है । यह सिरीज 1990 के दशक के उत्तर प्रदेश की हिंसा, गैंगवार और पुलिस राजनीति पर केन्द्रित है ।यह सिरीज अपराध, राजनीति और निज़ी संघर्षों का एक ऐसा मेल है, जो दर्शकों को कुर्सी से बाँधे रखता है । दस एपीसोड की इस सिरीज में एनकाउंटर स्पेशलिस्ट अविनाश मिश्रा के उसी बेखौफ अंदाज को आगे बढ़ाया गया है, जिसे रणदीप हुड्डा ने अपने दमदार अभिनय से फिर जान फूँक दी है । कॉप ड्रामा में अक्सर दिखाई जाने वाली कुछ घिसी-पिटी बातें यहाँ भी मौजूद हैं, लेकिन कलाकारों की अभिंत क्षमता और कहानी में आने वाले जज्बाती मोड़ इसे एक बार देखने लायक जरूर बनाते हैं । सस्पेंस और एक्शन के शौकीनों के लिए यह सीजन

काफी मसालेदार साबित होने वाला है.

सिरीज में रणदीप हुड्डा एक बार फिर स्पेशल टास्क फोर्स इकाई के पुलिस अधिकारी - अविनाश की भूमिका में है । इस बार कहानी सिर्फ अपराधियों से मुठभेड़ तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सिरीज़ के नायक अविनाश की निजी जिन्दगी के संघर्षों को भी दिखाती है। जब उनके बेटे वरुण पर हत्या का आरोप लगता है, तब कहानी एक भावनात्मक मोड़ लेती है और सिरीज़ को संवेदनाओं से आपूरित कर देती है ।उन्होंने अविनाश मिश्रा की भूमिका में बेहतरीन अभिनय किया है । चाहे वह अपराधियों से टकराने वाला गुस्सा हो या अपने परिवार के लिए उनकी आँखों में दिखने वाला दर्द, रणदीप ने हर इमोशन को बखूबी जिया है । उनके वन-लाइनर्स और एक्शन करने का अंदाज इतना सहज है कि वह स्क्रीन पर पूरी तरह छा जाते हैं। रणदीप की यह खासियत है कि वह गंभीर दृश्यों के बीच में भी हल्के-फुल्के हास्य और रोमांस का तड़का लगाना जानते हैं, जो दर्शकों को बोरियत महसूस नहीं होने देता. इसके साथ ही अविनाश का कभी-कभी सीधे दर्शकों से बात करना, बहुत अच्छा असर डालता है।.

सिरीज में रणदीप के अलावा बाकी कलाकारों ने भी बेहतरीन काम किया है । उर्वशी रौतेला ने अविनाश की पत्नी पूनम के रूप में एक सेंसेटिव सेसटिव परफॉर्मेंस दी है, जो अपने पति के खतरनाक पेशे और परिवार के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रही हैं. उर्वशी रौतेला की एक्टिंग के लिए तो आपको ये सीरीज देखना ही चाहिए. विलेन के रूप में अभिमन्यु सिंह काफी खौफनाक नजर आते हैं, वहीं अमित सियाल ने 'शेख' के किरदार को अपनी चिर-परिचित खामोशी और क्रूरता के साथ निभाया है. शालिन भनोट दोस्ती और वफादारी के सीन में जंचते हैं, जबकि फ्रेडी दारूवाला और रजनीश दुग्गल जैसे कलाकारों ने भी कहानी के माहौल को जीवन्त बनाये रखा है ।

अभिनय के मामले में सिरीज जितनी मजबूत है लेखन के मामले में कई मौकों पर उतनी ही कमजोर पड़ जाती है. कहानी के कुछ सब-प्लॉट्स, जैसे डॉ. सुमन का ट्रैक, थोड़े खींचे हुए और बनावटी लगते हैं । कुछ चरित्रों के फैसले रियलिटी से परे नजर आते हैं, जो आपको थोड़ा खटक सकते हैं. साथ ही, बीच के एपीसोड में कहानी थोड़ी धीमी हो जाती है और कॉप-थ्रिलर की वही पुरानी घिसी-पिटी बातों का सहारा लेती है, जिससे सस्पेंस का ग्राफ थोड़ा नीचे गिर जाता है ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

जोरासाँको, टैगोर परिवार एवं भारतीय कला

हमारा देश भारत तमाम नये-नये समस्याओं से रोज दो-चार हो रहा था। किसान, सिपाही, जमींदार सभी रोज बनते नये कानूनों से परेशान थे ऐसी स्थिति में कला किस हालत में रही होगी सहज ही समझा जा सकता है। उसके बाद 1857 और उसके बाद का यह वही समय था जब भारत संपन्न होने के बावजूद लुटेरों की वजह से विपन्नावस्था को प्राप्त हो चुका था, हाँ आप चाहे जो भी कहें पर मैं तो उन्हें लुटेरा ही कहूँगा। तड़प रहा था भारत विदेशियों के चंगुल में। हालांकि 57 के विद्रोह के बाद सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक लगभग सभी स्तरों पर भारी स्थिति में परिवर्तन होने लगे थे। भारतीय धर्म में हस्तक्षेप से बचने तथा भारतीय राजाओं की रियासतों के सुरक्षित होने की बातें भी सामने आई पर प्रशासनिक स्तर पर अधिक कठोरता के प्रावधान भी बनें।

भारतीय मायनों में तब का समय बहुत अच्छा नहीं था। प्राकृतिक धरोहरें, कल-कल करती नदियाँ, ऊपर-नीचे तैरते-उतराते पहाड़, पहाड़ों के सर्पीले राहों में सहभागी बनीं हरी-भरी घासों का साथ तब भी था, हवा तब भी थी पर सुकून, खुली हवा का स्वच्छंद साँस संभव नहीं था। राजाओं, नवाबों, स्थानीय शासकों की स्वतंत्रता, ताकत धीरे-धीरे छिनती जा रही थी, कइयों ने कंपनी के साथ बातचीत भी करी पर जैसा कि हमेशा से रहा है कि अत्यधिक बल, अहम मनुष्य को अंधा बना देता है यहाँ भी ऐसा ही हुआ। हमारा देश भारत तमाम नये-नये समस्याओं से रोज दो-चार हो रहा था। किसान, सिपाही, जमींदार सभी रोज बनते नये कानूनों से परेशान थे ऐसी स्थिति में कला किस हालत में रही होगी सहज ही समझा जा सकता है। उसके बाद 1857 और उसके बाद का यह वही समय था जब भारत संपन्न होने के बावजूद लुटेरों की वजह से विपन्नावस्था को प्राप्त हो चुका था, हाँ आप चाहे जो भी कहें पर मैं तो उन्हें लुटेरा ही कहूँगा। तड़प रहा था भारत विदेशियों के चंगुल में। हालांकि 57 के विद्रोह के बाद सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक लगभग सभी स्तरों पर भारी स्थिति में परिवर्तन होने लगे थे। भारतीय धर्म में हस्तक्षेप से बचने तथा भारतीय राजाओं की रियासतों के सुरक्षित होने की बातें भी सामने आई पर प्रशासनिक स्तर पर अधिक कठोरता के प्रावधान भी बनें। उच्च पदों से भारतीय लगभग बाहर ही हो गये। सेना का पुनर्गठन हुआ, सेना में भारतीयों की संख्या घटी जबकि अंग्रेजों की संख्या बढ़ाई गई। बड़े हथियार केवल अंग्रेजों के अधीन रखने की बात पास हुई। सामाजिक, आर्थिक रूप से तो कमजोर कर ही दिया गया था सांस्कृतिक रूप से भी विपन्न करने की लगातार कोशिशें हुई बाकी बचा-खुचा काम तो कला विद्यालय कर ही रहे थे। अंग्रेजी कलाकार जो लगातार भारतीय दौरे पर आते रहते थे और अपने फायदे को देखते हुए जगह-जगह जाकर कृतियों को बनाते रहते थे और मौका मिलते ही भारतीय कला को नीचा दिखाने से भी नहीं चूकते थे। भारतीय कला जो बिना पंख के पक्षी की भांति तड़प रही थी, जिसको आगे बढ़ाने में पूरे देश में यदि कोई नाम दिख रहा था तो वो था राजा रवि वर्मा जी का..

खैर..बात और आगे की करते हैं और आते हैं जोरासाँको, जिसका नाम आते ही याद आता है कलकत्ता और टैगोर परिवार, हाँ वही कला, साहित्य एवं संस्कृति से संपन्न द्वारकानाथ टैगोर, देवेंद्रनाथ टैगोर, रवींद्रनाथ टैगोर तथा अवनींद्रनाथ टैगोर का परिवार। यहाँ का रहन-सहन तमाम झँझावातों के बावजूद भी सांस्कृतिक परिवेश में समृद्ध था, जहाँ संयुक्त परिवार का चलन, विशाल हवेली, विशाल आँगन, दीवारों पर कलाकृतियाँ, पुस्तकालय, पूजा कक्ष, वैचारिक चर्चाओं का सम्पन्न परिवेश था। यह जगह भारतीय नवजागरण का केंद्र भी था। यहाँ बच्चों को भी स्वतंत्र वैचारिक परिवेश में रखा जाता था। कवि, लेखक, दार्शनिक, समाज-सुधारक लगभग सभी विधाएँ यहाँ हरहमेश जीवंत रहती थीं। हम आज वहीं की बात करेंगे और करेंगे रवींद्रनाथ के भतीजे, गिरींद्र नाथ के पोते एवं गुणेंद्रनाथ तथा सौदामिनी टैगोर के पुत्र अवनींद्रनाथ टैगोर की जिन्होंने भारतीय कला को एक अलग एवं सम्पन्न मुकाम तक पहुँचाया। पिता की भी इन सभी चीजों में गहरी रुचि थी।

समय 1870 के आसपास का है, जोरासाँको में सुबह की हल्की धूप, संकरी गलियों में पेड़-पौधों, खिड़कियों आदि से छनकर धीरे-धीरे उतर और तैर रही थी। चारों ओर अद्भुत सा दृश्य, प्रकाश एवं छाया के खेल प्रकृति के साथ मिलकर एक अनोखे दुनिया के दर्शन कराने से लग रहे थे। कच्ची-पक्की सड़कों पर चहलकदमियों के भव्य नजारे थे, लोग धोती-कुर्ता, उत्तरीय, जैसे कपड़ों में

अपने-अपने कामों में लगे हुए थे। महिलाएं हल्के रंग की साड़ियों में बड़ी ही शालीन एवं अदब के साथ अपने में मशगूल थीं। पास से ही खेत-खलिहान, नहरों से अपनी महक और छाप लिए हवाएँ इधर से उधर मगन हो घूम रही थीं, झूम रहे थे लोग। कहीं पूजा-पाठ, घंटियों, शंखों की ध्वनि तो कहीं मंत्रोच्चार होते संस्कृत के मंत्र एवं बांग्ला में प्रार्थना का पाठ तो कहीं शिक्षा का अलख जगाता बड़ा सा विद्या केंद्र। आँगनों में तुलसी का पौधा और वहाँ का पूजा-पाठ भी भव्य था। बात अब ठाकुरबाड़ी की.., ठाकुरबाड़ी जहाँ बड़े हवेलीनुमा घर, बड़ा आँगन, बरामदे और ऊँची छतें थीं, जहाँ किसी एक कमरे में वेद-उपनिषद, धर्म-ग्रंथों का अध्ययन होता था तो दूसरे में तबला, सितार, पियानों की मधुर-मधुर धुनों के बीच अभ्यास में मस्त कोई बालक तो वहीं किसी और कमरें में नाटकों पर रिहर्सल करते लोग। एक ही आँगन में अलग-अलग विधानों का लाजवाब संयोजन था यहाँ। भारतीय और युरोपीय के बीच एक पुल सा रहा यह स्थल। दीवारों पर बढ़िया फ्रेम किए चित्र तो किताब और लैंप रखने हेतु डियउटियाँ या आलमारियाँ शोभा थीं यहाँ की। बालक बड़े-बड़े झरोखों से जब बाहर देखते थे तो एक अलग ही लोक नजर आता था, जिसे बड़ा अच्छा तो नहीं कहा जा सकता था कारण गोरों की छाप बाहर किसी न किसी रूप में नजर आ ही जाती थी। घोड़ा-गाड़ी, सिपाही, फकीर तो कहीं साधू। दिन बिल्कुल चहल-पहल के बीच बीत रहा होता था तो शाम और रात भी कुछ कम नहीं थी। घरों को लौटते लोग, चेहरों पर थकान और उदासियाँ साथ लिए लौटते थे। गाय-गोरुओं का रम्भाना तो पक्षियों का अपने घोंसले को लौटना भी वातावरण को बड़ा ही सुहावना बना दे रहा था। रवींद्रनाथ टैगोर उस समय लगभग दस वर्ष के थे जब उनके भतीजे अवनीन्द्रनाथ का जन्म हुआ, तिथि 7 अगस्त 1871 थी और उसी दिन कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा था।

घर में भारतीय परंपरा एवं आधुनिक विचारों का सुंदर संगम पहले से ही था। परिवार में वेद, पुराण जैसे धार्मिक ग्रंथों पर भी खूब अध्ययन और चर्चा होती थी साथ ही पाश्चात्य शिक्षा और विचारों पर भी सहमति, असहमति जैसी स्थिति हमेशा बनती बिगड़ती रहती थी और ऐसे सहमति तथा असहमति के बीच पलते-बढ़ते नन्हें बालक अवनीन्द्रनाथ के अंदर भी भारतीयता का बीज पनपा जो आगे चलकर इनको कला में भारतीय परंपरा पर काफी कुछ करने को प्रेरित किया। हालांकि यह वही समय था जब कला पर भी अंग्रेजियत थोपने की लगातार कोशिशें हो रही थीं और भारतीय छात्र जो कला में रुचि ले रहे थे, अपने कला में अंग्रेजी प्रभाव पा कर खुश थे। शैली, भाव, विचार सभी पर उन्हीं का प्रभाव था और कला पर यह प्रभाव प्राप्त कर लेने वाले खुद को संपन्न कलाकार मान बैठते थे। उधर पाश्चात्य विचारकों द्वारा भारतीय प्रभाव को कमतर आंकने का प्रयास लगातार जारी था। अवनींद्रनाथ जी जो बचपन से ही कला को लेकर सजग थे, फूल, पत्ती, जीव, जन्तु, रहन-सहन में प्रकृति की उपयोगिता पर बारीकी से नजर रख रहे थे। बहुत ही कम उम्र में उन्होंने ऐसे-ऐसे रेखांकन बना डाले थे कि लोग देखकर दंग हो जाते थे। संस्कृत में खूब अध्ययन करने वाले अवनी का आगे चलकर दाखिला कलकत्ता स्कूल आफ आर्ट में हो गया जहाँ इतालवी चित्रकार सिग्नोर गिल्हार्डी से पेस्टल रंग, जल रंग, लाइफ स्टडी सहित और भी कला की बारीकियाँ सीखीं। चित्र गूगल से साभार।

मध्यप्रदेश पर्यटन दिवस

डॉ. लोकेन्द्र सिंह

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।

किसी पर्यटक को निराश नहीं करता है मध्यप्रदेश

भारत का हृदय 'मध्यप्रदेश' अपनी नैसर्गिक सुन्दरता, आध्यात्मिक ऊर्जा और समृद्ध विरासत के चलते सदियों से यात्रियों को आकर्षित करता रहा है। आत्मा को सुख देनेवाली प्रकृति, गौरव की अनुभूति करानेवाली धरोहर, रोमांच बढ़ानेवाला वन्य जीवन और विश्वास जगानेवाला अध्यात्म, इन सबका मेल मध्यप्रदेश को भारत के अन्य राज्यों से अलग पहचान देता है। इस प्रदेश में प्रत्येक श्रेणी के पर्यटकों के लिए कई चुम्बकीय स्थल हैं, जो उन्हें बरबस ही अपनी ओर खींच लेते हैं। यह प्रदेश उस बड़े हृदय के मेजबान की तरह है, जो किसी भी अतिथि को निराश नहीं करता है।

वैभव की इस भूमि पर पराक्रम की गाथाएं सुनाते और आसमान का मुख चूमते दुर्ग हैं। भारत का जिब्राल्टर 'ग्वालियर का किला', महेश्वर में लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर का राजमहल, मांडू का जहाज महल, दतिया में सतखंडा महल, रायसेन का दुर्ग, दुर्गावती का मदन महल, जलमग्न रहनेवाला रानी कमलापति का महल और गिन्नौरगढ़ सहित अनेक किले हैं, जो मध्यप्रदेश के स्थापत्य की विविधता का बखान करते हैं। देवों के चरण भी इस धरा पर पड़े हैं। उज्जैन, जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण पढ़े। चित्रकूट, जहाँ प्रभु श्रीराम माता सीता और भ्राता लखन सहित वनवास में रहे। ओंकारेश्वर, जहाँ आदि जगद्गुरु शंकराचार्य ने आचार्य गोविन्द भगवत्पाद से दीक्षा ली। मध्यप्रदेश में दो ज्योतिर्लिंग- महाकाल और ओंकारेश्वर हैं। इसके साथ ही भगवान शिव ने कैलाश और काशी के बाद अमरकंटक को परिवार सहित रहने के लिए चुना है। एक ओर जहाँ द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण प्रतिवर्ष मुरैना में आकर ढ़ाई दिन रहते हैं तो वहीं ओरछा में राजा राम का शासन है। महारानी कुंवर

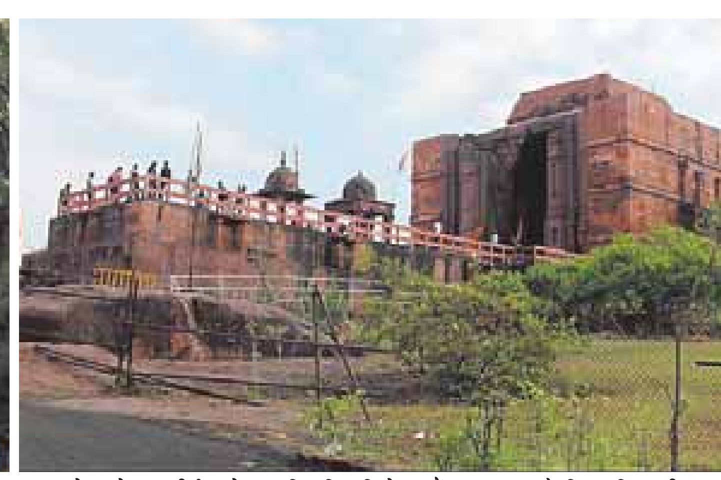

गणेश के पीछे-पीछे श्रीराम अयोध्या से ओरछा तक चले आये थे। ओरछा राजाराम के मंदिर के लिए ही नहीं, अपितु अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए भी प्रसिद्ध है।

मध्यप्रदेश अपने वनों के लिए भी प्रसिद्ध है। सतपुड़ा के घने जंगल का तो अद्भुत वर्णन कवि भवानी प्रसाद मिश्र की कविता में आता ही है। चम्बल के भरकों से लेकर कटनी, उमरिया और जबलपुर से लगा शाहडार का जंगल भी रोमांचक यात्राओं का ठिकाना है। मेकल पर्वत पर सदानीरा माँ नर्मदा का उद्गम स्थल ही नहीं, अपितु वहां का सघन वन भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। मध्यप्रदेश भारत का इकलौता राज्य है जहाँ सर्वाधिक 12 राष्ट्रीय उद्यान हैं। कान्हा, बांधवगढ़, पेंच, शिवपुरी, पन्ना और कई अन्य राष्ट्रीय उद्यान लोगों को वन्य जीवन को देखने का दुर्लभ, रोमांचपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। मध्यप्रदेश सफ़ेद बाघ 'मोहन' का ही घर नहीं है, अपितु यह रहस्य और कौतुहल बढ़ानेवाले बालक 'मोगली' का भी जन्मस्थान है। सर विलियम हेनरी स्लीमन ने 'एन एकाउंट ऑफ वाल्वस नरचरिंग चिल्ड्रन इन देयर डेन्स' शीर्षक से लिखे अपने एक दस्तावेज में उल्लेख किया है कि मध्यप्रदेश के सिवनी जिले के जंगल (पेंच टाइगर रिजर्व) में मोगली का घर था। वाइल्डलाइफ पर्यटन मध्यप्रदेश को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान दिलाता है। वन्य जीवों के संरक्षण के कारण मध्यप्रदेश के पास 'टाइगर स्टेट' के साथ ही 'द लेपर्ड स्टेट' और 'घड़ियाल स्टेट' का दर्जा भी है। बाघ देखने के लिए न केवल देशभर से बल्कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से भी लोग मध्यप्रदेश में आते हैं। भिंड और मुरैना के समीप स्थित चम्बल सफारी तो घडियाल संरक्षण का बड़ा केंद्र बन गई है। कभी डाकुओं के लिए कुख्यात रहे चम्बल के बीहड़ अब डोल्फिन के लिए प्रसिद्ध हैं। भारत में गंगा के बाद सबसे अधिक डोल्फिन चम्बल सफारी में पाए जाते हैं।

जनजातीय संस्कृति से साक्षात्कार करने का अवसर भी मध्यप्रदेश देता है। मंडला, उमरिया, छिंदवाडा, बालाघाट, झाबुआ और अनूपपुर में कई स्थान हैं, जो पर्यटन के तौर पर विकसित किये गए हैं। कुछ समय के लिए दुनिया की भागम-भाग से दूर प्रकृति की गोद में सुख की अनुभूति करने के लिए तामिया और पातालकोट जैसे स्थान भी हैं, जो आम पर्यटकों से छिपे हुए हैं। वहीं, मढ़ई, तवा, परसिली, हनुमंतिया जैसे अनेक स्थल भी हैं, जिन्हें पर्यटन गतिविधियों का केंद्र बनाया जा रहा है। पर्यटकों द्वारा खोजे जा रहे नये पर्यटन स्थलों को भी व्यवस्थित करने में मध्यप्रदेश की सरकार अग्रणी है। इंदौर के समीप महू से पातालपानी-कालाकुंड तक चलनेवाली हेरिटेज ट्रेन भी सीटी बजाकर उन पर्यटकों को बुलाती है, जो प्रकृति के नजारों में खोना चाहते हैं।

सब प्रकार के पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध मध्यप्रदेश के ऐसे अनेक स्थान हैं, जो अभी भी पर्यटन के वैश्विक मानचित्र पर आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वर्तमान में यूनेस्को की 'विश्व विरासत' की सूची में मध्यप्रदेश के चार स्थल है- बुद्ध का सन्देश देते साँची के स्तूप, प्रागैतिहासिक सभ्यता के चिन्ह भीमबेटिका, सौंदर्य के साक्षी खजुराहो के साथ त्यागमय संस्कृति का प्रतीक ओरछा। ये चारों ही स्थान विदेशी पर्यटकों को लुभाते हैं।

मध्यप्रदेश का कोई कोना ऐसा नहीं है, जो पर्यटन की दृष्टि से मरुस्थल हो। ग्वालियर के आसपास ककनमठ, मितावली, पड़ावली, दतिया, सोनागिर, ओरछा, चंदेरी और शिवपुरी का एक ट्रेवल रूट बनता है। भोपाल के आसपास साँची, विदिशा, ग्यारसपुर, उदयगिरी की गुफाएं, भोजपुर, भीमबेटका, देलावाडी और रायसेन एक पर्यटन स्थल समूह बनता है। इंदौर को केंद्र मानकर उज्जैन, हनुमंतिया, ओंकारेश्वर, ब्रह्मपुर (बुरहानपुर), महेश्वर और मांडू का एक पर्यटन स्थल का समूह बनता है। वहीं, जबलपुर से भेड़ाघाट, बरगी, बांधवगढ़, अमरकंटक, कान्हा और पेंच जा सकते हैं। खजुराहो के साथ ओरछा, अजयगढ़, चित्रकूट, मुकुंदपुर वाइल्डलाइफ सेंक्चुरी, संजय राष्ट्रीय उद्यान, मैहर और हीरों के साथ अपने जंगलों के लिए प्रसिद्ध पन्ना के पर्यटन स्थल घुमे जा सकते हैं। उधर, सतपुड़ा की रानी 'पचमढ़ी' के साथ मढ़ई, तवा, तामिया और पातालकोट का एक पर्यटन समूह बनता है। मध्यप्रदेश के पर्यटन, उसकी समृद्ध विरासत और गौरव का दर्शन करना है तो एक बार मध्यप्रदेश गान पढ़/सुन लेना चाहिए। वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार महेश श्रीवास्तव ने इस गीत में मध्यप्रदेश की एक खूबसूरत और गौरवपूर्ण तस्वीर उतार दी है।

मध्यप्रदेश घूमने का सबसे अच्छा समय

वैसे तो मध्यप्रदेश राज्य का वर्ष के किसी भी समय दौरा किया जा सकता है। मध्य भारत में स्थित होने के कारण, मध्य प्रदेश की जलवायु आमतौर पर गर्म और शुष्क होती है। परन्तु अच्छा होगा कि अक्टूबर से मार्च के बीच मध्यप्रदेश घूमने की योजना बनायी जाए। इस दौरान यहाँ का तापमान अनुकूल होता है और बारिश के बाद कई पर्यटन स्थल अपने पूर्ण सौंदर्य के साथ उपस्थित होते हैं। प्रदेश में सर्दियों का मौसम वन्यजीव अभयारण्यों, ऐतिहासिक स्थलों, नदी घाटियों और प्राचीन मंदिरों में जाने के लिए एकदम सही है।

पर्यटन

डॉ. नरेंद्र कुमार डबकरा

लेखक प्राध्यापक हैं।

देवभूमि उत्तराखंड- एक सफर अनेक अनुभूतियां

यात्राएं सिर्फ घूमने फिरने तक ही सीमित नहीं होती है, बल्कि यह हमें नई चीजे सीखने का अवसर देती है ।मानसिक ताजगी और खुशी महसूस होती है। यात्रा करने से आत्मविश्वास बढ़ता है । अलग-अलग जगहों, वहां की भाषाओं, संस्कृतियों एवं लोगों को देखते हैं तो हमें समझ आता है कि दुनिया कितनी बड़ी और विविध है ।

अगर यह यात्रा उत्तराखंड के पहाड़ों की हो तो - 'सोने पर सुहागा ' क्योंकि यह सिर्फ एक यात्रा नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक, प्राकृतिक और जीवन बदल देने वाला अनुभव होती है । यहां के पवित्र तीर्थ स्थल, दिव्य आध्यात्मिक अनुभव देते हैं । हिमालय की बर्फीली चोटियां, हरे-भरे जंगल, झरने और नदियां मन को मंत्र - मुग्ध कर देते हैं । यहां के लोग, उनकी सादगी, लोकगीत और परंपराएं हमें भारतीय संस्कृति की जड़ों से जोड़ती है। उत्तराखंड की हमारी यात्रा भी कुछ ऐसी ही रही, एक ऐसा सफर जिसमें हर कदम पर एक नई अनुभूति हमारा इंतजार कर रही थी।

10 अप्रैल 2026 को हमारी पावन, पवित्र और यादगार उत्तराखंड यात्रा की शुरुआत नीमच से सड़क मार्ग द्वारा उदयपुर के लिए हुई। उदयपुर से हम वायु मार्ग द्वारा दिल्ली पहुंचे और वहां से पुनः सड़क मार्ग से रामपुर की ओर प्रस्थान किया । यात्रा के दौरान दिल्ली की सियासी स्थलीयों से होते हुए हम अंततः केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में उप महानिदेशक आदरणीय आर एस रावत सर के घर पहुंचे जहां आत्मीय स्वागत और विश्राम का सुखद अनुभव मिला। यह शुरुआत ही उत्साह, अपनत्व और नई यादों से भरी रही। एक ऐसी यात्रा जो आगे और भी सुंदर अनुभवों से भरने वाली थी।

11 अप्रैल को प्रातः 11ः00 बजे सड़क मार्ग द्वारा हमने नैनीताल के लिए प्रस्थान किया। पहाड़ी रास्तों के मनमोहक दृश्यों का आनंद लेते हुए हम दोपहर में नैनीताल पहुंचे। नैनीताल में विभिन्न दर्शनीय स्थलों जैसे नैनी झील, नैना देवी का मंदिर, माल रोड आदि का भ्रमण किया। नैना देवी मंदिर एक अत्यंत पवित्र और लोकप्रिय 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है।

नैनीताल से आगे बढ़ते हुए हम नीम करोली बाबा के पावन कैंची धाम पहुंचे जहां की शांति और आस्था ने मन को गहराई से छू लिया। कैंची धाम की स्थापना 1962 में नीम करोली बाबा ने की थी, जो भगवान हनुमान के परम भक्त थे। यहां हनुमान जी की विशेष पूजा होती है। यहां दो पहाड़ियां कैंची की तरह एक दूसरे को काटती हुई दिखाई देती है, इसीलिए इस स्थान का नाम कैंची धाम पड़ा। यह धाम विदेशों में भी प्रसिद्ध है। स्टीव जॉब्स, मार्क जुकरबर्ग जैसे व्यक्तित्व भी यहां आध्यात्मिक प्रेरणा ले चुके हैं। यह आस्था, विश्वास और आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र है।

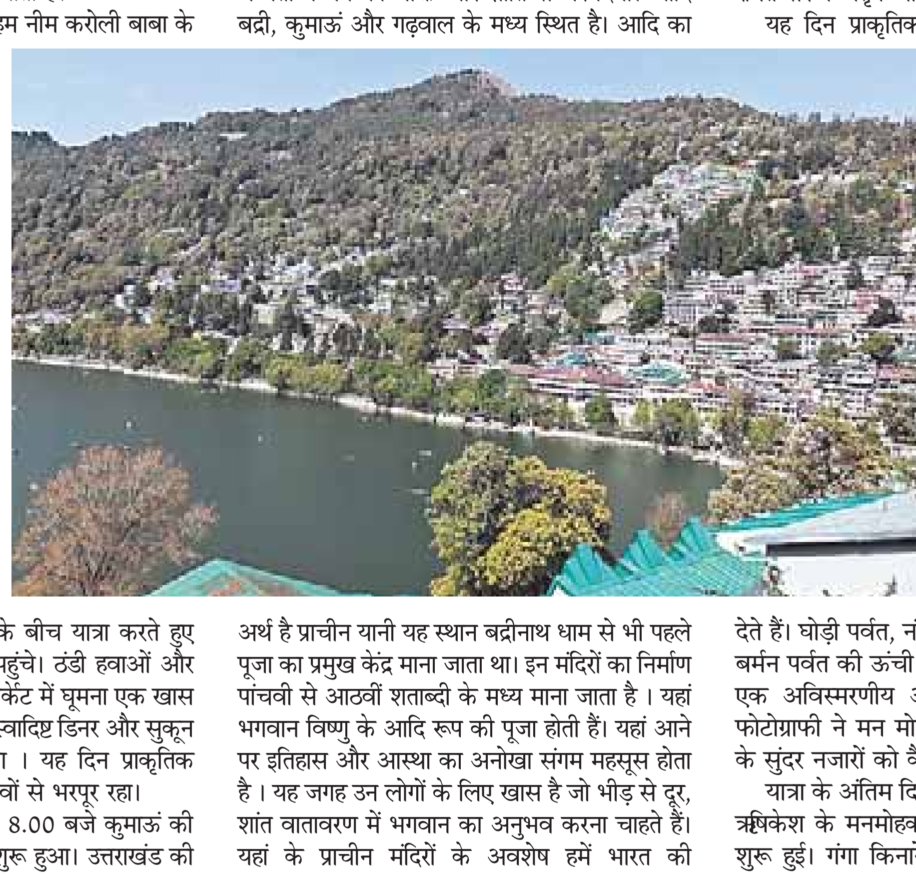

कुमाऊं की सुंदर पहाड़ियों के बीच यात्रा करते हुए हम शाम 7.00 बजे रानीखेत पहुंचे। ठंडी हवाओं और सुंदर नजारों के बीच स्थानीय मार्केट में घूमना एक खास अनुभव रहा । दिन का समापन स्वादिष्ट डिनर और सुकून भरे रात्रि विश्राम के साथ हुआ । यह दिन प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक अनुभवों से भरपूर रहा।

12 अप्रैल 2026 की प्रातः 8.00 बजे कुमाऊं की सुरम्य वादियों से हमारा सफर शुरू हुआ। उत्तराखंड की ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसेंण से होते हुए चौखुटिया, पांडुवा खाल और नेहाल चौरी के रमणीय मार्गो ने सफर को और भी यादगार बना दिया। आगे बढ़ते हुए हमें राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक 16 मंदिरों के अवशेष 'आदि बद्री' के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहां की दिव्यता एवं भव्यता ने मन को भक्ति और शांति से भर दिया। आदि बद्री, कुमाऊं और गढ़वाल के मध्य स्थित है। आदि का अर्थ है प्राचीन यानी यह स्थान बद्रीनाथ धाम से भी पहले पूजा का प्रमुख केंद्र माना जाता था। इन मंदिरों का निर्माण पांचवी से आठवीं शताब्दी के मध्य माना जाता है । यहां भगवान विष्णु के आदि रूप की पूजा होती हैं। यहां आने पर इतिहास और आस्था का अनोखा संगम महसूस होता है । यह जगह उन लोगों के लिए खास है जो भीड़ से दूर, शांत वातावरण में भगवान का अनुभव करना चाहते हैं। यहां के प्राचीन मंदिरों के अवशेष हमें भारत की आध्यात्मिक विरासत की गहराईयां का एहसास कराते हैं।

गढ़वाल क्षेत्र की ओर बढ़ते हुए हम कणप्रयाग, नंदप्रयाग, गोपेश्वर, चमोली, पीपल कोटी, पातालगंगा, नाग कोटी, हेलंग जैसे पहाड़ी एवं रमणीय स्थलों से होते हुए ज्योर्तिमठ पहुंचे। अंततः दिन के अंतिम पड़ाव में रावत सर के पैतृक गांव परसारी पहुंचे।

यह दिन प्राकृतिक सुंदरता, आध्यात्मिक अनुभूति और अद्वैत यात्रा अनुभवों से भरपूर रहा।

यात्रा के चतुर्थ दिवस 13 अप्रैल 2026 को हम पहुंचे लगभग 9200 फीट की ऊंचाई पर स्थित हिमालयी हिल स्टेशन ओली - जो ट्रैकिंग और स्कीइंग के लिए विश्व प्रसिद्ध है। गढ़वाली भाषा में ओली का अर्थ है 'घास का मैदान' और सच में, यह जगह उम्मीद से भी ज्यादा खूबसूरत निकली । यहां से गोर्सन बुग्याल, तातीन झील के रमणीय दृश्य और चारों ओर फैले बर्फ से ढके पहाड़ मन को मंत्र मुग्ध कर देते हैं। घोड़ी पर्वत, नंदा देवी, कामेत, हाथी पर्वत और बर्मन पर्वत की ऊंची ऊंची चोटियों का नजारा देखना एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। यहां पर की गई फोटोग्राफी ने मन मोह लिया, ऐसा लगा जैसे प्रकृति के सुंदर नजारों को कैनवास पर उतार लिया हो।

यात्रा के अंतिम दिवस 18 अप्रैल की सुहानी सुबह ऋषिकेश के मनमोहक और शांत वातावरण के बीच शुरू हुई। गंगा किनारे उगते सूर्य की सुनहरी किरणें और ठंडी हवाओं ने मन को सुकून से भर दिया। प्रकृति और अध्यात्म का यह संगम मानो पुरी यात्रा का सबसे खूबसूरत उपसंहार बन गया। प्रातः के इन दिव्य दृश्यों को हृदय में संजोकर कर जोली ग्रांट हवाई अड्डा देहरादून की ओर रवाना हुए। वहां पहुंचकर वह भावुक क्षण भी आया जब रावतसर, संतोष मैडम एवं वैभव से विदाई लेनी पड़ी। उनका स्नेह, आत्मीयता और मेहमान नवाजी ने हमारे हृदय पर अमित छाप छोड़ दी। विदाई के उस पल में शब्द कम पड़ गए पर दिल में एक ही भाव था, कृतज्ञता और फिर से मिलने का वादा। देहरादून से उड़ान भरते हुए पहले दिल्ली पहुंचे और फिर दिल्ली से उदयपुर की यात्रा जारी रही । रात्रि लगभग 9.00 बजे उदयपुर पहुंचने के बाद सड़क मार्ग से रात 11.00 बजे नीमच पहुंचे।

उत्तराखंड का यह खूबसूरत सफर अनेक अनुभूतियां लेकर आया, लेकिन इस यात्रा की सबसे सुंदर अनुभूति केवल स्थान से ही नहीं, बल्कि लोगों से भी जुड़ी रही। रावतसर और उनके परिवार का अपनापन, स्नेह और आत्मीयता ने यह महसूस कराया की रिश्ते केवल खून के ही नहीं होते हैं, बल्कि कुछ रिश्ते उनसे भी ऊपर होते हैं। इस यात्रा ने हमें सिखाया कि जीवन की असली खूबसूरती सरलता, प्रकृति और मानवीय रिश्तों में छुपी होती है। इस यात्रा ने यह एहसास कराया की उत्तराखंड केवल एक धार्मिक या पर्यटन स्थल ही नहीं, बल्कि प्रकृति, संस्कृति और अध्यात्म का जीवन्त संगम है। जीवन की भाग दौड़ से दूर प्रकृति की गोद में ही सच्चा सकून और आत्मिक शांति मिलती है। पहाड़ों ने सिखाया - ऊंचा उठना क्या होता है ? नदियों ने हमें बताया - बहते रहना ही जीवन है। अंत में, मैं यही कहूंगा की यात्रा का अंत, वास्तव में अंत नहीं होता, यह एक नई शुरुआत होती है, नई सोच की, नई ऊर्जा की और जीवन को ओर बेहतर ढंग से जीने की।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत देवीजी सागर तालाब में कलेक्टर ने श्रमदान कर दिया संदेश

जल स्रोतों को सहेजना हम सभी का सामूहिक दायित्व, इसे जन-आंदोलन बनाना आवश्यक : कलेक्टर मीना

धार। पारंपरिक जल स्रोतों, कुओं, बावड़ियों, नदियों और तालाबों के पुनरुद्धार तथा संरक्षण के लिए चलाए जा रहे विशेष 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत कलेक्टर राजीव रंजन मीना ने शनिवार प्रातः स्वयं देवीजी सागर तालाब पहुँचकर फावड़ा थामकर श्रमदान किया। उन्होंने तालाब परिसर की सफाई और गहरीकरण कार्य में श्रम अर्पित करते हुए जिलेवासियों को जल संरक्षण में सक्रिय जनभागीदारी निभाने का संदेश दिया। नगर पालिका परिषद, धार द्वारा 'श्रमदान - लोगों की जनभागीदारी' और 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के विशेष बैनरों के साथ जागरूकता अभियान चलाया गया।

जनप्रतिनिधियों और आमजन में दिखा भारी उत्साह

कलेक्टर मीना की इस मुहिम से प्रेरित होकर कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, प्रबुद्ध नागरिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा युवाओं ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सभी उपस्थित जनों ने उत्साहपूर्वक तालाब के कैचमेंट एरिया की सफाई की, प्लास्टिक कचरा हटाया और मिट्टी उत्खनन के कार्य में हाथ बंटाकर श्रमदान किया। जनप्रतिनिधियों ने प्रशासन के इस कदम की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के सामूहिक प्रयासों से जल संकट से निपटने में बड़ी मदद मिलेगी।

अभियान के तहत जिले भर में गतिविधियां जारी

उल्लेखनीय है कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत धार जिले के विभिन्न विकासखंडों और ग्राम पंचायतों में भी जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार का कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। इसके तहत प्राचीन बावड़ियों की सफाई, तालाबों का गहरीकरण, और वर्षा जल संचयन (वाटर हार्वेस्टिंग) प्रणालियों को दुरुस्त करने का कार्य जन सहयोग से किया जा रहा है।

अधिकारियों और गणमान्य नागरिकों की रही उपस्थिति

इस वृहद श्रमदान कार्यक्रम में नपाध्यक्ष नेहा महेश बोड़ाने , मुख्य नगरपालिका अधिकारी कुंवर विश्वनाथसिंह, नगर पालिका स्टाफ, जनप्रतिनिधि सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

जल स्रोतों का संरक्षण केवल शासकीय कार्य नहीं, बल्कि सामाजिक कर्तव्य

कलेक्टर राजीव रंजन मीना ने कहा कि जल ही जीवन का मुख्य आधार है और गिरते भू-जल स्तर को सुधारने के लिए पारंपरिक जल संरचनाओं को पुनर्जीवित करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि 'जल गंगा संवर्धन अभियान' की सफलता तभी सुनिश्चित होगी जब समाज का हर वर्ग इससे जुड़ेगा। यह केवल एक प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित करने का एक सामूहिक अनुष्ठान है। उन्होंने जिले के सभी नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों से अपील की कि वे अपने आस-पास के जल स्रोतों को स्वच्छ रखने और उनके संवर्धन में अपना बहुमूल्य योगदान दें।

सीवर लाइन की तोड़ी गई सड़कों और नपा परिसर में खोदे गए गड्ढे का क्या होगा ?

करोड़ों की सडक़ें उखड़ीं, बगीचा उजड़ा, पाइप लाइन अधर में, ठेका निरस्त होने के बाद उठे कई सवाल

बैतूल/मुलताई। मुलताई के ताप्ती सरोवर में गंदा पानी जाने से रोकने के उद्देश्य से शुरू किया गया सीवर लाइन प्रोजेक्ट अब मुलताई नगरवासियों के लिए भारी परेशानी और आक्रोश का कारण बनता जा रहा है। करोड़ों रुपए खर्च होने के बावजूद परियोजना अधूरी पड़ी है और ठेकेदार का ठेका निरस्त किए जाने के बाद पूरे मामले को लेकर कई गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। नगर पालिका द्वारा ठेका कंपनी की एफडी राजसात कर ली गई है, वहीं सीवर पाइप चोरी मामले में पुलिस ने ठेकेदार कंपनी से जुड़े दो लोगों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर न्यायालय में चालान पेश कर दिया है। इसके बावजूद नगरवासियों के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि परियोजना के नाम पर उखाड़ी गई लगभग 10 करोड़ रुपए की सीमेंट-कंक्रीट सडक़ें आखिर कब और कैसे सुधरेंगी। नगर के कई वार्डों में सड़कें क्षतिग्रस्त होने से लोगों को रोजाना आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बरसात नजदीक होने से नागरिकों की चिंता और बढ़ गई है।

नपा परिसर का बगीचा उजाड़कर बना दिया गंदे पानी का गड्ढा- सीवर लाइन प्रोजेक्ट के तहत नगर पालिका परिसर में स्थित हरे-भरे बगीचे को भी नहीं बख्शा गया। यहां बगीचा उजाड़कर गंदे पानी के लिए बड़ा गड्ढा खोद दिया गया था। परियोजना अधर में लटकने के कारण अब यह स्थान बदहाल स्थिति में पहुंच चुका है। नगरवासियों का कहना है कि सौंदर्यीकरण और पर्यावरण संरक्षण की अनदेखी कर लाखों रुपए की सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया, लेकिन अब तक इसके पुनर्विकास या गड्ढे को भरने को लेकर कोई ठोस योजना सामने नहीं आई है।

तीन वार्डों में बिछी पाइप लाइन का भविष्य भी है अधर में- नगर के तीन वार्डों में सीवर पाइप लाइन बिछाई जा चुकी है, लेकिन प्रोजेक्ट बंद होने के बाद इन पाइप लाइनों का भविष्य भी अधर में लटक गया है। नागरिक सवाल उठा रहे हैं कि यदि परियोजना पूरी ही नहीं होनी थी, तो करोड़ों रुपए खर्च कर सडक़ों को खोदने और पाइप लाइन बिछाने का औचित्य क्या था। जानकारी के अनुसार ठेकेदार को लगभग 4 करोड़ रुपए का भुगतान किया जा चुका है, जबकि करीब 25 किलोमीटर लंबी सीमेंट-कंक्रीट सडक़ें क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। ऐसे में केवल ठेका निरस्त कर कुछ लाख रुपए की एफडी जब्त करना क्या करोड़ों रुपए की बर्बादी की भरपाई कर पाएगा, यह बड़ा प्रश्न बना हुआ है।

जांच और जवाबदेही पर उठ रहे सवाल- नगरवासियों और जनप्रतिनिधियों के बीच इस बात को लेकर भी नाराजगी है कि करोड़ों रुपए की इस परियोजना में समुचित मॉनिटरिंग और तकनीकी जांच क्यों नहीं की गई। लोगों का कहना है कि जब तक डीपीआर तैयार करने वाली एजेंसी, मॉनिटरिंग करने वाले अधिकारी और बिना पर्याप्त भौतिक सत्यापन के करोड़ों रुपए का भुगतान करने वाले जिम्मेदार अधिकारियों पर ठोस कार्रवाई नहीं होगी, तब तक नगर की अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं का भी यही हाल होता रहेगा।

पाइप चोरी मामले में भी नहीं दिखाई दी गंभीरता- सीवर लाइन परियोजना से जुड़े पाइप चोरी मामले में भी कार्रवाई को लेकर सवाल उठ रहे हैं। नगर पालिका की शिकायत पर मुलताई पुलिस ने अपराध क्रमांक 239/24 के तहत धारा 454, 380 एवं 34 भादवि के तहत मामला दर्ज किया है।

इनका कहना है-

यह मामला हमारे समय का नहीं है, किंतु नगर पालिका के सीवर लाइन के पाइप चोरी मामले में मुलताई पुलिस ने न्यायालय में चालान पेश कर दिया है।

नरेन्द्र सिंह परिहार,
थाना प्रभारी मुलताई

मैं और सीएमओ सर ने इस संबंध में कमिश्नर साहब से भेंट कर उन्हें प्रोजेक्ट की जानकारी दी है। उन्हें पुराने प्रोजेक्ट की स्थिति, टूटी हुई सडक़ों और नगर पालिका परिसर के सामने खोदे गए गड्ढे से अवगत कराया गया है। उन्होंने दोबारा सर्वे कराकर नई डीपीआर बनाकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं, किंतु अब तक विभागीय पत्र प्राप्त नहीं हुआ है।

— योगेश अनेराव,
उपयंत्री, नगर पालिका मुलताई

खेड़ीसावलीगढ़ स्वास्थ्य शिविर में 274 मरीजों का आयुष पद्धति से उपचार

निःशुल्क दवा वितरण और योग गतिविधियों का हुआ आयोजन

बैतूल। खेड़ीसावलीगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में आयुष विभाग की टीम ने आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए 274 मरीजों का निःशुल्क उपचार किया। जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर ने बताया कि शिविर का आयोजन जिला कलेक्टर बैतूल के मार्गदर्शन में किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर

पवार, जनपद उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, सरपंच शर्मिला ठाकुर, जनपद सदस्य सरोज राठौर, समाजसेवी रुपेश अग्रवाल और आनंद तिवारी सहित जिलास्तरीय विशेषज्ञ टीम मौजूद रही। जनप्रतिनिधियों ने अपने संबोधन में चिकित्सकों और स्वास्थ्य टीम के कार्यों की सराहना की। आयुर्वेद पद्धति के माध्यम से उच्च रक्तचाप, मधुमेह, रक्ताल्पता, उदर रोग सहित अन्य बीमारियों का उपचार कर मरीजों को निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। शिविर में डॉ. मनक धुर्वे नोडल अधिकारी के रूप में मौजूद रहे। उनके साथ डॉ. शैलेंद्र कृष्णा तिवारी, डॉ. विशाल वर्मा, डॉ. शिल्पा धोटे, डॉ. नैन्सी राठौर सहित आयुष विभाग के कुल 14 कर्मचारी उपस्थित रहे। शिविर के दौरान योग प्रशिक्षक सागर सिवनकर एवं योग सहायक कुसुम यादव ने योग गतिविधियां कराकर लोगों को योगाभ्यास कराया। आयुष विभाग द्वारा पूरे शिविर में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं।

यूरिया खाद की कालाबाजारी पर प्रशासन सख्त

बैतूल। जिले के मुलताई विकासखंड के मां यमुना कृषि सेवा केंद्र मोही एवं अमरूते एग्री क्लीनिक परमंडल पर यूरिया खाद की कालाबाजारी का मामला सामने आया है। किसानों की शिकायत पर प्रशासन और कृषि विभाग की संयुक्त टीम ने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व राजीव कहार के मार्गदर्शन में कार्रवाई करते हुए दुकान का निरीक्षण किया। जांच में खाद निर्धारित मूल्य से अधिक दाम पर बेचना पाया गया। साथ ही स्टॉक रजिस्टर नहीं रखना और विक्रय बोर्ड नहीं लगाए जाने जैसी गंभीर अनियमितताएं पाई गईं। प्राप्त जानकारी के अनुसार किसान मधु कौशिक और अशोक रघुवंशी ने शिकायत दर्ज कराई थी कि केंद्र संचालक किसानों को अधिक कीमत पर यूरिया खाद बेच रहा है। शिकायत के बाद असिस्टेंट कलेक्टर पुष्पराज नानासाहेब खोट, तहसीलदार संजय बरैया और वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी घनश्याम घिड़ोडे ने मौके पर पहुंचकर जांच की। जांच में निर्धारित मूल्य से अधिक कीमत पर विक्रय होना पाया गया। दुकान पर विक्रय मूल्य सूची प्रदर्शित नहीं

थी और स्टॉक रजिस्टर भी उपलब्ध नहीं कराया गया, जो कि उर्वरक (नियंत्रण) आदेश 1985 के नियमों का उल्लंघन है। अधिकारियों ने इसे खाद की कालाबाजारी से जुड़ा मामला मानते हुए तत्काल प्रभाव से दोनों उर्वरक विक्रेताओं की अनुज्ञप्ति को निलंबित कर दिया है एवं तत्काल प्रभाव से विक्रय प्रतिबंधित करके दूकान को सील कर दिया गया है।

ग्राम बाकूड़ और जामखोदर में कलेक्टर ने सुनीं ग्रामीणों की समस्याएं

ग्रामीण समस्याओं के समाधान में लापरवाही बर्दाश्त नहीं : कलेक्टर

बाकुड में पंचायत भवन निर्माण 15 जून तक शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने शनिवार को घोड़ाडोंगरी विकासखंड के ग्राम बाकूड़ और जामखोदर में जिला अधिकारियों के साथ ग्रामीणों की समस्याएं ध्यानपूर्वक सुनीं। इस दौरान उन्होंने निर्देशित किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं के कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि गत दिवस घोड़ाडोंगरी जनपद पंचायत कार्यालय में आयोजित बैठक में ग्राम बाकूड़ और जामखोदर में अधिक शिकायतें आने पर दूसरे दिन पहुंचकर कलेक्टर ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनी। ग्राम बाकूड़ में ग्रामीणों के आयुष्मान कार्ड नहीं बनने की शिकायत पर उन्होंने शिविर आयोजित कर शेष बचे ग्रामीणों के आयुष्मान कार्ड

बनाए जाने के निर्देश दिए। बाकुड में पंचायत भवन निर्माण 15 जून तक शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। ग्राम गाताखेड़ा और जुआझार में मोबाइल नेटवर्क की समस्या पर संबंधित अधिकारी को समस्या के निराकरण के निर्देश दिए। बाकुड में विद्यालय, आंगनवाड़ी भवन में शौचालय की स्थिति ठीक नहीं होने की समस्या पर तथा नल-जल योजना की पाइपलाइन जगह-जगह से लीकेज होने की शिकायत पर उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल, स्कूलों में पंखे, शौचालय और बिजली जैसी मूलभूत व्यवस्थाएं सुचारू रहें। इसके अलावा उन्होंने बारिश के पूर्व पौधारोपण, जल निकासी, नाली की सफाई तथा कचरा प्रबंधन की कार्य योजना बनाए जाने के निर्देश संबंधित अधिकारी को दिए। बाकुड़ वन ग्राम में पुल निर्माण के लिए आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने जामखोदर गांव में ग्रामीणों द्वारा सिंचाई के लिए विद्युत समस्या पर त्वरित निराकरण के निर्देश दिए। ग्राम जामखोदर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों के आधार कार्ड, एवं समग्र आईडी नहीं बनने पर उन्होंने शिविर आयोजित कर सभी दस्तावेज तैयार कराने तथा पात्र हितग्राहियों को योजनाओं से लाभान्वित करने के निर्देश दिए। इस दौरान छात्रावास में मोटर खराब होने की समस्या पर कलेक्टर ने मरम्मत कार्य किए जाने के निर्देश दिए। ग्राम में नल जल योजना बंद पाए जाने पर पीएचई के अधिकारियों को पेयजल समस्या के समाधान के निर्देश दिए। इसके अलावा ग्राम जामखोदर में जर्जर आंगनवाड़ी केंद्र और स्कूलों में शौचालय की समस्या पर आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए।

नवीन पुलिस थाना परिसर में शांति समिति बैठक संपन्न

सोहागपुर। कलेक्टर नर्मदापुरम के निर्देशन पर आगामी त्यौहारों को शांतिपूर्ण, सौहार्दपूर्ण एवं सुरक्षित वातावरण में संपन्न कराने के उद्देश्य से शांति समिति की बैठक नवीन थाना परिसर में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने की ।इस अवसर पर सर्वश्री बावड़ी वाले मंदिर के महंत हरिकिशनदास जी महाराज, तहसीलदार आर एस झरबड़े,नगर निरीक्षक राहुल रायकवार,नगर पालिका अध्यक्ष धर्मेन्द्र शर्मा, ब्लाक मेडीकल आफीसर डॉ रेखा गौर,विगुण विभाग प्रभारी शामिल थे। शांति समिति बैठक में अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने कहा कि आगामी त्यौहारों को लेकर नागरिक सांप्रदायिक सौहार्द एवं आपसी भाईचारे के साथ त्यौहार मनाए। इसी अवसर पर शांति समिति के सदस्यों ने स्वच्छता, पेयजल व्यवस्था एवं विगुण व्यवस्था को सुचारू बनाने का आग्रह किया । नगर निरीक्षक राहुल रायकवार ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि त्यौहारों को शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाने तथा अफवाहों एवं भ्रामक सूचनाओं से दूर रहने का आग्रह किया गया।

वहीं निर्धारित नियमों का पालन सुनिश्चित करने तथा किसी भी समस्या की स्थिति में तत्काल प्रशासन को सूचित करने का आग्रह किया गया। अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने संबंधित विभागों को आवश्यक व्यवस्थाएं समय पर सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

फटाका होलसेल भंडार का निरीक्षण- कलेक्टर महोदय के निर्देशानुसार आहूजा पटाखा भंडारण फैक्ट्री का अनुविभागीय

अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने निरीक्षण किया। इस अवसर पर तहसीलदार आर एस झरबड़े,नगर निरीक्षक राहुल रायकवार आदि संयुक्त दल ने सुरक्षा के समस्त पहलुओं का बारीकी के अध्ययन किया। ताकि कोई अनहोनी घटित नहीं हो।

सुश्री प्रियंका भल्लावी ने आहूजा पटाखा भंडारण के मालिक को अग्नि सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु अतिरिक्त संख्या में कार्यशील अग्निशमन यंत्र स्थापित करने हेतु निर्देशित किया गया । इसके साथ ही कार्यरत स्टाफ को अग्निशमन यंत्र का प्रयोग करने की ट्रेनिंग कराने हेतु निर्देशित किया गया द्यफैक्ट्री संचालक को उपरोक्त कमियों का शीघ्र निराकरण करते हुए समस्त सुरक्षा मानकों एवं आवश्यक व्यवस्थाओं का पालन सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया।

समापन दिवस कथा

भारत में कहीं भी कल्कि भगवान् की पूजा नहीं होती है , जानते ही नहीं उड़ीसा जगन्नाथ संस्कृति को: श्री मिश्र

भोपाल। भारत में कहीं भी कल्कि अवतार भगवान की पूजा नहीं होती है, जानते ही नहीं है । विगत दिवस जगन्नाथ मंदिर की शिखा पर 5बजकर 14 मिनट पर, मंगल आरती के समय चील पक्षी बैठा था।यह सारे संसार के अशुभ संकेत है। जगन्नाथ प्रभु ब्रह्माण्ड के प्रभु हैं। पुराणों में वर्णित है कि जब ऐसा शुभ स्थानों पर गिद्ध आदि पक्षी बैठेंगे तब अनिष्टकारी समय आएगा। उक्त उद्गार भोपाल कन्या स्कूल पंचवटी परिसर में आयोजित श्रीमद्भागवत पुराण कथा एवं भविष्य मालिका पुराण कथा के अवसर पर खचा-खच भरे पंडाल के अतिरिक्त स्कूल परिसर में गेट तक भरे श्रद्धालुओं के बीच कहें। आपने आगे कथा को विस्तार देते हुए कहा कि कल्कि अवतार में तीन प्रभुओं का समावेश रहेगा। तथा कल्कि भगवान् में 64 कलाओं को समावेश रहेगा। आपने कहा मनुष्य रूप में कल्कि भगवान् इतने शक्तिशाली होंगे कि पर भर में किसी देश का विनाश कर देंगे। पांडव का उड़ीसा में जन्म होगा। आपने कहा कि आने वाला समय विनाशकारी है। आपने खचा-खच भरे परिसर में श्रद्धालुओं को चेताया कि वर्तमान में आप किसी देवी-देवताओं की आराधना करते हैं। करते रहे। लेकिन त्रिकाल संध्या , मंत्र पढ़ो, विष्णु के 16 नाम है। माधव स्तुति है

प्रभावशाली मंत्र है। दया, धर्म बढ़ाओ, युद्ध का संकेत है परिवर्तन का समय है ।भ्रम को दूर करके श्रीमद्भागवत पुराण का अध्ययन करके भगवान जगन्नाथ में अपने आप को सर्मपित कर दें। भगवान् का मूल मंत्र ही माधव माधव, कृष्ण,राम है। आज की कथा में आपने नागरिकों को सत्य की राह पर चलने का संदेश दिया। श्रीमद्भागवत कथा एवं भविष्य मालिका पुराण की कथा में आपने राधा कृष्ण विवाह संवाद, समस्त देवी-देवताओं में उत्सव,कल्कि अवतार के गूढ़ रहस्य, संसारिक मोह-माया आदि विषयों पर विस्तृत सारगर्भित उद्बोधन दिया।

श्रीमद्भागवत कथा के उपरांत राम हरे कृष्ण हरे अनंत माधव हरे। नीलांचल वाले आदि गीतों पर मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिक झूमने लगे। इसके उपरांत भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें समस्त उपस्थित श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की। इस अवसर पर गुरुद्वारा साहिब भोपाल की मातृशक्ति एवं सामाजिक सदस्यों दीपू वाधवानी,भीम भाईआहूजा, पंकज माखीजा, मनोहर लालवानी, नवीन मेघानी, विशू राजानी एयरपोर्ट सोसायटी सचिव , सतराम दास खूबचंदानी, विनोद राजानी,, कपिल सचदेव, प्रकाश रंगवानी, प्रकाश कोटवानी, दिनेश मुल्तानी जबलपुर, विशाल गोलानी सोहागपुर,श्री वासवानी परिवार आदि ने भंडारे की व्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस सप्ताह श्रीमद्भागवत पुराण कथा एवं भविष्य मालिका पुराण में प्रदेश ही नहीं गुजरात, उत्तराखंड, आदि प्रांतों की मातृशक्ति एवं श्रद्धालुजन शामिल हुए थे। उक्त श्रद्धालु भक्तों ने प्रतिदिन सुबह कथा में नागरिकों को शामिल करने के गीत गाते हुए आमंत्रित करते थे।इसके पूर्व आयोजक श्रीमति नीरजा गोलानी खूबचदानी एवं पंकज खूबचदानी ने महाकालेश्वर भव धारा मंडल उज्जैन के एक सौ से अधिक मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिकों का शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। आयोजक पंकज खूबचदानी ने सभी का आभार व्यक्त किया है। अंतिम दिवस की उल्लेखनीय बात यह रही कि कथा पंडाल के खचा-खच भरे जाने पर प्रवेश द्वार तक श्रद्धालुओं का जमघट लगा रहा।

'दृश्यम-3'

रहस्य और चौंकाने वाले मोड़ों ने बांध रखा

मलयालम सिनेमा की चर्चित रहस्य-रोमांच श्रृंखला 'दृश्यम 3' आखिरकार सिनेमाघरों में पहुंच गई। निर्देशक जीतू जोसेफ और अभिनेता मोहनलाल की इस बहुप्रतीक्षित फिल्म को लेकर दर्शकों में लंबे समय से उत्सुकता थी। मोहनलाल के जन्मदिन पर प्रदर्शित हुई इस फिल्म को पहले ही दिन जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है। देशभर के सिनेमाघरों में दर्शकों की भारी भीड़ देखने को मिली, वहीं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी फिल्म को लेकर लगातार प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं।

दृश्यम श्रृंखला की इस तीसरी फिल्म में मोहनलाल के साथ मीना, अंसिबा हसन, एस्थर अनिल और आशा शरत भी अहम भूमिकाओं में हैं। शुरुआती समीक्षाओं में दर्शकों ने खास तौर पर फिल्म के रहस्य, भावनात्मक तनाव और अप्रत्याशित मोड़ों की खूब सराहना की है। दर्शकों के अनुसार फिल्म की शुरुआत परिवार और उनके मानसिक संघर्षों पर केंद्रित है। कुछ लोगों को शुरुआती घटनाक्रम थोड़ा धीमा लगा, लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, तनाव गहराता जाता है। कई दर्शकों ने लिखा कि अंतराल से ठीक पहले आने वाला बड़ा मोड़ पूरी कहानी को नई दिशा दे देता है। एक दर्शक ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पहला हिस्सा अपेक्षाकृत शांत है, लेकिन अंतराल के बाद कहानी पूरी तरह बदल जाती है और यहीं से फिल्म अपनी असली पकड़ बनाती है। वहीं दूसरे दर्शकों ने इसे 'दृश्यम-2' से भी अधिक प्रभावशाली शुरुआत बताया है।

फिल्म में जॉर्ज कुट्टी के रूप में मोहनलाल की संयमित और गहरी अभिनय शैली को खूब सराहा जा रहा है। दर्शकों का कहना है कि वह पहले की तरह इस बार भी रहस्य और भावनाओं के बीच संतुलन बनाते नजर आते हैं। मीना को लेकर भी लोगों ने कहा कि वह वर्षों बाद भी 'रानी' के

किरदार में पूरी तरह ढली हुई दिखाई देती हैं। कई प्रशंसकों ने इसे मोहनलाल के जन्मदिन का शानदार उपहार बताया है। कुछ दर्शकों ने फिल्म के अंतिम हिस्से और चरम दृश्य को दिमाग घुमा देने वाला करार दिया है। लोगों का मानना है कि कहानी में रहस्य, भावनाएं और पारिवारिक तनाव इस तरह जुड़े हैं कि दर्शक अंत तक सीट से बंधे रहते हैं।

क्या है 'दृश्यम-3' की कहानी

'दृश्यम' श्रृंखला की तीसरी कड़ी पहले की फिल्मों से अलग अंदाज में आगे बढ़ती है। इस बार जॉर्ज कुट्टी को यह स्पष्ट नहीं होता कि उसका पीछा कौन कर रहा है। उसके खिलाफ ऐसी अदृश्य ताकत काम कर रही हैं, जो बेहद योजनाबद्ध तरीके से उसके परिवार के करीब पहुंच जाती हैं। फिल्म की कहानी पिछली घटनाओं के कई वर्षों बाद की है। जॉर्ज कुट्टी और उसका परिवार सामान्य जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अतीत का रहस्य अब भी उनका पीछा नहीं छोड़ता। इस बार खतरा केवल कानून या पुलिस से नहीं है, बल्कि अपराध-बोध और मानसिक दबाव भी परिवार को भीतर से तोड़ने लगता है। कहानी में कुछ नए पात्र भी जुड़े हैं, जिनमें वीणा नंदकुमार से जुड़ा किरदार खास भूमिका निभाता है। इन नए घटनाक्रमों के कारण परिवार की सुरक्षा की दीवार धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगती है और जॉर्ज कुट्टी को एक बार फिर अपने परिवार को बचाने के लिए नई चालें चलनी पड़ती हैं।

हिंदी संस्करण को लेकर उत्सुकता

मलयालम फिल्म की सफलता के साथ अब हिंदी दर्शकों के बीच भी 'दृश्यम-3' को लेकर उत्साह बढ़ गया है। हिंदी संस्करण में एक बार फिर अजय देवगन मुख्य भूमिका निभाएंगे। इससे पहले 'दृश्यम' और 'दृश्यम-2' के हिंदी रूपांतरण को दर्शकों ने काफी पसंद किया था। सूत्रों के अनुसार हिंदी संस्करण की तैयारी भी तेजी से चल रही है। इसमें तब्बू, श्रिया सरन और इशिता दत्ता के लौटने की संभावना जताई जा रही है। चर्चा है कि हिंदी फिल्म की कहानी मूल मलयालम संस्करण के आधार पर आगे बढ़ेगी, लेकिन दर्शकों को चौंकाने के लिए कुछ नए बदलाव भी किए जा सकते हैं। 'दृश्यम' श्रृंखला की सबसे बड़ी ताकत उसकी रहस्यपूर्ण पटकथा और साधारण परिवार की असाधारण लड़ाई रही है। यही कारण है कि तीसरी कड़ी भी दर्शकों के बीच चर्चा का केंद्र बनी हुई है।

रियल बॉक्स

स्टार किड्स जिन्हें नाम मिला, काम नहीं!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

बॉलीवुड में स्टार किड होना हमेशा से एक बड़ा फायदा माना गया है। फिल्मी परिवार से जुड़े कलाकारों को इंडस्ट्री में प्रवेश के लिए ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ता। बड़े निर्माता, चर्चित निर्देशक और मीडिया का ध्यान उन्हें शुरुआत से ही मिल जाता है। लेकिन हिंदी सिनेमा का इतिहास यह भी बताता है कि सिर्फ मशहूर उपनाम किसी कलाकार को लंबे समय तक सफल नहीं बना सकता। दर्शक आखिरकार अभिनय, मेहनत और व्यक्तित्व को ही स्वीकार करते हैं। इंडस्ट्री में कई ऐसे स्टार किड्स रहे हैं, जिन्हें लगातार मौके मिले, लेकिन वे दर्शकों के दिलों में अपनी जगह नहीं बना पाए। वहीं कुछ कलाकार ऐसे भी रहे जिन्होंने शुरुआती असफलताओं के बावजूद खुद को साबित किया और सुपरस्टार बने। यही वजह है कि अब बॉलीवुड में यह धारणा मजबूत हो चुकी है कि विरासत रास्ता जरूर आसान करती है, लेकिन सफलता की गारंटी नहीं देती।

बॉलीवुड के 'जंपिंग जैक' जितेंद्र के बेटे तुषार कपूर ने फिल्म 'मुझे कुछ कहना है' से शानदार शुरुआत की थी। पहली ही फिल्म के बाद उन्हें रोमांटिक हीरो के तौर पर देखा जाने लगा था। हालांकि इसके बाद उनकी कई फिल्में लगातार असफल होती चली गईं। लगभग 35 फिल्मों में काम करने के बावजूद तुषार खुद को बड़े एकल नायक के रूप में स्थापित नहीं कर सके। बाद में 'गोलमाल' श्रृंखला में उनके हास्य किरदार को काफी पसंद किया गया, लेकिन उनकी पहचान एक सहायक अभिनेता तक सीमित रह गई। इसी तरह राजेंद्र कुमार जैसे बड़े सितारे के बेटे कुमार गौरव ने भी शानदार शुरुआत की थी। फिल्म 'लव स्टोरी' ने उन्हें रातोंरात युवाओं का पसंदीदा सितारा बना दिया था। उस दौर में उनकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई थी कि उन्हें अगला सुपरस्टार कहा जाने लगा। लेकिन शुरुआती सफलता लंबे समय तक नहीं टिक सकी। करीब 30 फिल्मों में काम करने के बावजूद वह अपने करियर को स्थिर नहीं रख पाए। कई बार उन्हें नए अंदाज में पेश करने की कोशिश हुई, लेकिन दर्शकों ने उन्हें दोबारा उसी उत्साह से स्वीकार नहीं किया।

स्टाइलिश अभिनेता फिरोज खान के बेटे फरदीन खान को भी इंडस्ट्री में बड़े स्तर पर लॉन्च किया गया था। उन्होंने 'नो एंट्री', 'हे बेबी' और 'ऑल द बेस्ट' जैसी फिल्मों में काम किया, लेकिन उनकी व्यक्तिगत पहचान मजबूत नहीं बन सकी। लगभग 20 फिल्मों के बाद उनका करियर धीरे-धीरे कमजोर पड़ गया। लंबे समय तक फिल्मों से दूर रहने के बाद अब वह दोबारा अभिनय में वापसी की कोशिश कर रहे हैं। दिग्गज अभिनेता राज कुमार की दमदार छवि का असर उनके बेटे पुरु राजकुमार के करियर पर भी दिखाई दिया। उन्होंने 'बाल ब्रह्मचारी' से मुख्य अभिनेता के तौर पर शुरुआत की थी, लेकिन दर्शकों ने उन्हें खास पसंद नहीं किया। करीब एक दर्जन फिल्मों के बाद ही उनका करियर लगभग खत्म हो गया और वह अपने पिता जैसी लोकप्रियता हासिल नहीं कर सके।

मिथुन चक्रवर्ती के बेटे मिमोह चक्रवर्ती की शुरुआत भी काफी चर्चा में रही थी। फिल्म 'जिमी' से उन्हें बड़े स्तर पर पेश किया गया, लेकिन फिल्म बुरी तरह असफल रही। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों में काम किया, परंतु कोई भी भूमिका दर्शकों पर प्रभाव नहीं छोड़ सकी। बाद में उन्होंने अपना नाम महाअक्षय भी रखा, लेकिन इससे भी करियर में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया। मशहूर निर्माता-निर्देशक यश चोपड़ा के बेटे उदय चोपड़ा को 'मोहब्बतें' जैसी बड़ी फिल्म से शुरुआत मिली थी। शुरुआती लोकप्रियता के बावजूद वह अभिनय के क्षेत्र में ज्यादा आगे नहीं बढ़ सके। 'धूम' श्रृंखला में उनके हास्य किरदार को थोड़ी पहचान मिली, लेकिन वह कभी मुख्य अभिनेता के तौर पर सफल नहीं हुए। बाद में उन्होंने निर्माण कार्य और विदेशी परियोजनाओं की ओर ध्यान देना शुरू किया।

निर्माता वासु भगनानी के बेटे जैकी भगनानी को भी कई बड़े मौके मिले। 'कल किसने देखा' और 'फालतू' जैसी फिल्मों में काम करने के बावजूद उन्हें दर्शकों का वैसा समर्थन नहीं मिला जिसकी उम्मीद की जा रही थी। हालांकि अभिनय में सफलता न मिलने के बाद उन्होंने निर्माण के क्षेत्र में खुद को स्थापित कर लिया। कुछ स्टार किड्स ऐसे भी रहे जिनकी तुलना शुरुआत में बड़े सितारों से की गई, लेकिन उनका करियर जल्दी खत्म हो गया। हरमन बावेजा इसका बड़ा उदाहरण हैं। उनकी तुलना शुरुआती दौर में ऋतिक रोशन से की जाती थी। 'लव स्टोरी 2050' और 'व्हाट्स योर राशि' जैसी फिल्मों के बाद उनका करियर लगभग समाप्त हो गया।

हालांकि बॉलीवुड में ऐसे कई स्टार किड्स भी हैं जिन्होंने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया। ऋतिक रोशन को आज हिंदी सिनेमा के सबसे सफल कलाकारों में गिना जाता है। निर्देशक राकेश रोशन के बेटे होने के बावजूद उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई। 'कहो ना प्यार है', 'कोई मिल गया', 'कृष' और 'सुपर 30' जैसी फिल्मों ने उन्हें बड़े सितारों की कतार में खड़ा कर दिया। इसी तरह धर्मेंद्र के बेटे सनी देओल ने भी अपने दमदार अभिनय और संवाद शैली से अलग मुकाम हासिल किया। 'घायल', 'गदर' और 'बॉर्डर' जैसी फिल्मों ने उन्हें लंबे समय तक दर्शकों का पसंदीदा बनाए रखा। कपूर परिवार की विरासत को आगे बढ़ाने वाले रणबीर कपूर ने भी खुद को शानदार अभिनेता के रूप में स्थापित किया है। ऋषि कपूर के बेटे रणबीर ने 'रॉकस्टार', 'बर्फी', 'संजू' और 'एनिमल' जैसी फिल्मों से साबित किया कि अभिनय प्रतिभा सबसे अहम होती है। निर्देशक महेश भट्ट की बेटी आलिया भट्ट भी शुरुआत में स्टार किड होने की वजह से आलोचनाओं का सामना करती रहीं, लेकिन बाद में उन्होंने अपने अभिनय से आलोचकों को जवाब दिया और खुद को सफल अभिनेत्रियों की सूची में शामिल कर लिया।

आज बॉलीवुड में दर्शकों का नजरिया पहले से काफी बदल चुका है। सामाजिक माध्यमों और डिजिटल मंचों के दौर में लोग सिर्फ बड़े नाम से प्रभावित नहीं होते। दर्शक अब अभिनय, मेहनत और कहानी को ज्यादा महत्व देते हैं। यही वजह है कि कई स्टार किड्स बड़े मौके मिलने के बावजूद सफल नहीं हो पाए, जबकि कुछ ने लगातार मेहनत और प्रतिभा के दम पर अपनी अलग पहचान बनाई। हिंदी सिनेमा का इतिहास यही बताता है कि फिल्मी विरासत दरवाजा जरूर खोल सकती है, लेकिन लंबे समय तक टिके रहने के लिए मेहनत, प्रतिभा और दर्शकों का भरोसा जीतना सबसे जरूरी होता है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

कैंसर फ्री हुए संजय दत्त, स्टेज 4 कैंसर को मात

संजय दत्त हाल ही में अपने वार्षिक मेडिकल चेक-अप के लिए अमेरिका गए। रिपोर्ट्स के अनुसार, कैंसर डिटेक्ट होने के बाद से संजय दत्त रूटीन हेल्थ चेक अप और डॉक्टरों से कंसल्ट करने के लिए हर साल इसे फॉलो करते हैं। बताया जा रहा है कि संजय दत्त की रिपोर्ट्स सामने आ चुकी है और वो पूरी तरह से कैंसर फ्री हो चुके हैं। साल 2020 में स्टेज 4 फेफड़ों के कैंसर का सामना करने वाले संजय दत्त ने हार्डकोर ट्रीटमेंट और स्ट्रांग विल पावर के दम पर बीमारी को मात दी थी। कैंसर-फ्री घोषित होने के बाद से अभिनेता अपनी सेहत को लेकर काफी सतर्क हैं और नियमित जांच कराते रहते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि स्वास्थ्य जांच के बावजूद संजय दत्त का प्रोफेशनल शेड्यूल लगातार व्यस्त बना हुआ है। हिंदी फिल्मों के साथ-साथ वह साउथ इंडस्ट्री के कई बड़ी प्रोजेक्ट्स में भी सक्रिय हैं। हाल के वर्षों में उन्होंने अलग-अलग भाषाओं की फिल्मों में दमदार भूमिकाओं से दर्शकों का ध्यान खींचा है। संजय दत्त की कैंसर फ्री रिपोर्ट्स के बाद उनके फैंस में जश्न का माहौल है। 65 साल के संजय दत्त ने फिटनेस और पॉजिटिविटी के साथ कैंसर को हराते हुए एक नया उदाहरण पेश कर दिया है।

कंगना रनौत ने मंगलसूत्र का राज खोला

कंगना रनौत अक्सर अपने किसी न किसी बयान की वजह से सुर्खियों में रहती हैं. कई बार वो कुछ ऐसे राजनीतिक बयान दे देती हैं, जिसकी वजह से उन्हें आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है। लेकिन, अब अभिनेत्री अपने किसी बयान को लेकर नहीं बल्कि पर्सनल लाइफ की वजह से मीडिया में छाई हैं। उनकी सीक्रेट वेडिंग की चर्चा जोरों पर है, जिसके बाद अब कंगना ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया दी।

सोशल मीडिया पर कंगना रनौत की लेटेस्ट फोटोज और वीडियोज वायरल सामने आए थे, जिसमें अभिनेत्री को मंगलसूत्र और मांग में सिंदूर लगाए देखा गया था। इसके बाद सीक्रेट वेडिंग की चर्चा शुरू हो गई। खबर आग की तरह फैल गई थी, जिसके बाद कंगना ने अपना रिएक्शन दिया और सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा कि शादीशुदा महिलाओं के लुक को लेकर इतनी बड़ी बात क्या है?

कंगना रनौत ने सीक्रेट वेडिंग की चर्चाओं के बीच इंस्टाग्राम स्टोरी पर अपनी फोटो को शेयर करते हुए इस पूरे मामले पर सफाई दी और लिखा, 'मैं सिटी में किसी फिल्म की हर दिन शूटिंग कर रही हूं। किसी ने मेरी रेंडम फोटो क्लिक कर ली और उस समय मैं अपने कैरेक्टर और मेकअप में थी। अब मुझे बहुत सारे कॉल्स आ रहे हैं। लेकिन, शादीशुदा महिलाओं के लुक को लेकर इतनी बड़ी बात क्या है? एक्टर्स हर तरह के रोल प्ले करते हैं. मैं सीक्रेटली शादी नहीं करूंगी, मैं वादा करती हूं।'

चर्चा सिनेमा के चॉकलेटी चेहरों की

अशोक जोशी

इन दिनों अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक पृष्ठभूमि मे चॉकलेट की चर्चा कूंचाले मार रही है। राजनीति में यह चॉकलेट कांड संभवतः सबसे नया हो, लेकिन फिल्मों में चॉकलेट ने बहुत पहले ही तब दस्तक दे

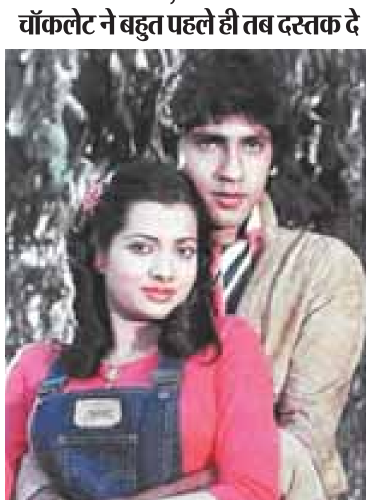

दी, थी जब मूछों वाले नायकों से प्रतिस्पर्धा करते हुए चंद कोमलांगी नायक पर्दे पर अवतरित हुए और चॉकलेटी हीरो के प्रादुर्भाव के साथ ही फिल्मों में चॉकलेट का आगमन हुआ।

हिंदी फिल्मों में चॉकलेटी हीरो उन अभिनेताओं को कहा जाता है जिनकी छवि रोमांटिक, मासूम, आकर्षक और लड़कियों में बेहद लोकप्रिय रही हो। आमतौर पर उनका लुक स्मार्ट, मुस्कान प्यारी और व्यक्तित्व सौम्य माना जाता है। वैसे तो नायकों को मर्दानगी का पर्याय माना जाता रहा है। पहले के ज्यादातर नायक हट्टे कट्टे और पहलवान नुमा हुआ करते थे। क्योंकि, उन दिनों पौराणिक या ऐतिहासिक फिल्मों का निर्माण होता था। लेकिन, जब से सिनेमा का परदा रूमानी हुआ नायकों का हुलिया ही बदल गया। मूंछ रखकर असफलता के आसमान पर सवार शम्मी कपूर ने जब मूछ साफ कर परदे पर धमाल किया तभी से चॉकलेटी नायक की अवधारणा भी शुरू हो गयी।

हालांकि इससे पहले देव आनंद और दिलीप कुमार ने भी क्लीन शेव्ड रूप में परदे पर दस्तक दी थी वह पूरी तरह से रूमानी नहीं थे। देव आनंद तो अक्सर ग्रे या एंटी हीरो जैसे कैरेक्टर निभाते रहे और दिलीप कुमार भी ग्रामीण युवक या ट्रेजडी के टैंक में गोता लगाते रहे। सही मायने में परदे पर शम्मी कपूर ने ही चॉकलेटी नायक की परम्परा आरंभ की लेकिन बाद में वह बागी कलाकार के रूप में स्थापित हो गए। वैसे तो शम्मी कपूर से पहले भारत भूषण चॉकलेटी चेहरे वाले नायक थे। लेकिन, वह पौराणिक और ऐतिहासिक फिल्मों से चलते चलते पारिवारिक फिल्मों में गुम हो गए। उन्ही की तरह राजेन्द्र का चेहरा भी रूमानी था। वह भी पारिवारिक फिल्मों में सफलता के बाद प्यारे भाई, बेटे और पति के रूप से आगे बढकर जुबली कुमार के ओहदे तक पहुच गए, पर चॉकलेटी हीरो के बजाए उन्हें पारिवारिक नायक ही ज्यादा माना गया।

सही मायने में चॉकलेटी हीरो को आगे बढ़ाने का काम विश्वजीत ने किया। वह हीरो होने के बावजूद अपने स्त्री सुलभ चेहरे और स्त्रियोचित हाव भाव के कारण ज्यादा पसंद किए गए। कहीं कहीं तो वह नायिका से भी ज्यादा चॉकलेटी लगे। सॉफ्ट रोमांटिक इमेज और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण वे असली चॉकलेटी हीरो माने जाते थे। उन्हीं की तरह जॉय मुखर्जी ने भी बतौर चॉकलेटी हीरो भारी सफलता हासिल की। हल्के-फुल्के रोमांटिक किरदारों और स्मार्ट लुक के लिए मशहूर जॉय मुखर्जी ने 'लव इन टोक्यो' और 'शागिर्द' में अपने चॉकलेटी व्यक्तित्व के कारण भारी सफलता हासिल की और चॉकलेटी नायक की परम्परा को थामे रखा।

वैसे तो धर्मेन्द्र को हिन्दी फिल्मों का पहला हीमेन माना जाता है। उन्हें यह तमगा 'फूल और पत्थर' के बाद मिला। इसके पहले आए दिन बहार के, आया सावन झूम के जैसी फिल्मों में तो वह चॉकलेटी नायक के रूप में ही ज्यादा दिखे। सत्तर के दशक में चॉकलेटी हीरो के रूप में राजेश खन्ना ने जो धमाका किया वैसा धमाका न उनसे पहले सुना गया और न ही बाद में देखा गया। सत्तर से अस्सी के दशक में जब राजेश खन्ना के साम्राज्य का पतन और एंग्री यंग मैन के दौर की शुरुआत हुई तब बॉबी फिल्म के जरिए ऋषि कपूर ने चॉकलेटी नायक की परम्परा को धमाके के साथ पुनर्जीवित किया। अंत तक उन्हें चॉकलेटी नायक ही माना गया। उनके बाद वाली पीढी में कुमार गौरव ने पहली ही फिल्म 'लव स्टोरी' में अपने आपको चॉकलेटी नायक के रूप में स्थापित किया। वाकई में कुमार गौरव का चेहरा, डीलडौल और हाव भाव सभी चॉकलेटी नायक जैसा था। लेकिन, गलत फिल्मों के चयन और असफलता के भंवर में फंस कर वे गुमनामी के अंधकार में डूब गए। उन्हीं की तरह 'आशिकी' से चमके राहुल राय को भी चॉकलेटी नायक का रुतबा हासिल हुआ था। लेकिन, आगे यह सिलसिला जारी नहीं रह पाया।

जिन दर्शकों ने कयामत से कयामत तक, हम है राही प्यार के, दिल और 'मन' के आमिर खान को देखा वह भी उन्हें चॉकलेटी हीरो ही मानते रहे। वाकई अपने करियर के आरम्भ में आमिर चॉकलेटी नायक की सारी शर्तें पूरा करते थे। लेकिन जब उन्होंने मेथड एक्टिंग को अपनाया तो वह मिस्टर परफेक्ट बन गए और चॉकलेटी नायक का चोला उतर गया। उन्हीं की तरह अपनी आरम्भिक फिल्मों में सलमान खान और शाहरुख खान भी चॉकलेटी ही नजर आते थे लेकिन हृतिक रोशन के आगमन से यह ताज उसके सिर पर आ गया। लेकिन, बाद में जब अपनी बॉडी और एक्शन के बल पर सफल हुए तो यह ताज उनके सिर से भी उतर गया।

चेहरे के हाव भाव से सैफ अली खान भी चॉकलेटी ही थे। किंतु, बाद में उन्होंने भी एंटी हीरो और रफ टफ भूमिकाएं स्वीकार कर खुद ही यह चोला उतार दिया। नई पौध में शाहिद कपूर का चेहरा और हाव भाव उन्हें चॉकलेटी हीरो के रूप में वर्गीकृत करते हैं। लेकिन, एक दो फिल्म की सफलता के सिवाय वह इस चॉकलेटी छबि को आगे भुना नहीं पाए। सिद्धार्थ और वरुण धवन ने भी कुछ हद तक चॉकलेटी हीरो बनने की कोशिश की, लेकिन रूमानी फिल्मों का दौर ढलने के कारण उन्हें भी अपनी नई छबि गढनी पडी। आज के दौर में ले देकर कार्तिक आर्यन ही ऐसे नायक बचे हैं जो चॉकलेटी नायक कहलाने के हकदार हैं। उन्होंने अपनी इस छबि का फायदा भी उठाया है और इसे बरकरार भी रखा है। अभी भी उनके चेहरे की मासूमियत कायम है। जो उन्हें चॉकलेटी हीरो बनाए रखे है। लेकिन, लगता है यह सिलसिला ज्यादा नहीं चलेगा। क्योंकि, हिन्दी सिनेमा का मिजाज ही कुछ ऐसा है कि उनके बाद भी कोई न कोई युवा आकर चॉकलेटी हीरो की गद्दी पर बैठ ही जाएगा।

लेख-लेख पर लिखा है... (न) लिखने वाले का नाम

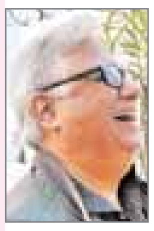

बाखबर
प्रकाश पुरोहित
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ना आप तो अपने नाम से लिखते ही रहते हो, एक लेख मेरे नाम से भी लिख दीजिए, लेखकों में शामिल हो जाऊंगा, जो भी फीस बनती है, देने को तैयार हूं। उसने यह प्रस्ताव रखा तो मुझे समझ ही नहीं आया कि क्या जवाब दूं। सच बात तो यह है कि उनका मंतव्य ही नही जान पाया। फिर यह समझ आया कि यह प्रस्ताव है या पूछताछ हो रही है, इसलिए मैंने साफ इनकार कर दिया।

आपको गलतफहमी हुई है। मैं इस तरह के काम नहीं करता हूं। मैंने साफ कह दिया।

क्या, आप लेखक नहीं हैं...? मैंने तो आपकी तस्वीर के साथ आपके लेख देखे हैं, पढ़े कभी नहीं, और आप साफ इनकार कर रहे हैं, क्या आप भी तमाम नेताओं की तरह दूसरों से लिखवाते हैं? वह

मुस्कुराता हुआ बोला। मैंने कब इनकार किया कि मैं लिखता नहीं हूं !

तो फिर यह क्यों कह रहे हैं कि ऐसे काम नहीं करता हूं? वह मजे लेने लगा था।

मैंने यह कहा है कि पैसे लेकर दूसरों के लिए, उनके नाम से नहीं लिखता हूं, बस !

देखिये, इस काम की सबसे बड़ी खूबी यही है कि ओरिजनल लेखक का तो कहीं जिक्र भी नहीं होता है। बताइए नेताओं के जो लेख समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में हिंदी, अंग्रेजी और तमाम भाषाओं में छपते हैं, क्या खुद लिखते हैं? जिनको लेख पढ़ना नहीं आते, उनके लेख अंग्रेजी में भी छप जाते हैं, जैसे अभी इटली की प्रधानमंत्री और हमारे माननीय का संयुक्त लेख सभी दूर छपा है, तो क्या दोनों ने मिल कर बहस की होगी, बैठकें की होंगी, विचार-विमर्श किया होगा, तब किसी एक ने, जिसे लैपटॉप या कम्प्यूटर चलाना आता होगा, उसने लिखा होगा? उसकी समझ और बात में तो दम था।

आजकल लिखना जरूरी नहीं है, बोलने से भी टाइप हो जाता है! उसे टेक्निकली करेक्ट किया।

भैया, लेकिन जो प्रेस से बात तक करने में हिचकते हों, इतना लंबा लेख बोल कर लिखवा सकते हैं क्या? क्यों, लंबे-लंबे भाषण भी तो दे ही रहे हैं इतने साल से? उसे पॉलिटिकली करेक्ट किया मैंने।

टेलिप्राम्प्टर की खोज तो इनके लिए ही हुई है, उन्हें पता है, शायद आपको जानकारी नहीं। वह मुस्कुरा रहा था।

हां, होगा, लेकिन तुम्हें यह किसने बताया कि पैसे लेकर तुम्हारे नाम से मैं लेख लिख दूंगा?

जो भी इन राष्ट्रीय नेताओं के लिए लिख रहा होगा, लेखक ही तो होगा। उन्हें भी किसी ने बताया ही होगा कि फलांजी लिख लेते हैं, अगर पैसा या पोस्ट मिल जाए। अभी बंगाल में अंग्रेजी के एक पत्रकार को जीत मिली या नहीं? उन्हें टिकट इसलिए तो नहीं दिया होगा कि अच्छे लेखक हैं, अच्छे होते तो टिकट लेते ही क्यों, लेकिन यह भरोसा तो रहा होगा कि जब कहेंगे, किसी के भी नाम से लिख देंगे। जब अपने नाम की फिक्र नहीं है तो दूसरों की चिंता कौन करता है! आपका लेख और तस्वीर हर हफ्ते देखता हूं तो लगा, क्या मालूम साइड बिजनेस यही हो। वह तैयारी से आया था।

नहीं भाई, कहा ना, मैं ऐसे गलत काम नहीं करता हूं! झटक दिया एकदम ।

यह किसने कहा कि गलत काम है? जो काम हमारे राष्टवादी और सनातनी नेता कर रहे हैं, गलत कैसे हो सकता है। यह तो साफ-साफ देशद्रोह है। छद्म लेखक को शर्म नहीं आ रही, जिस महामानव के नाम और चित्र के साथ छप रहा है, उसे झिझक नहीं है और जो खुलेआम परिचय, तस्वीर के साथ अपनी-अपनी भाषा में लेख छाप रहे हैं, उन्हें पेशे का भी लिहाज नहीं है तो फिर आप ऐसे कौन से लोकप्रिय लेखक हैं कि मेरे नाम से लिख देंगे तो बदनाम हो जाएंगे। फिर यह बात तो हम दोनों के बीच ही रहेगी ना। बताइए, आप जानते हैं, किस नेता के लिए कौन लेखक लिखता है? उसकी बात में तो दम था। मैं लगभग बेदम हो चला।

आप संकोच मत कीजिए, नहीं पता, ज्यादा दाम के लिए आप नखरे दिखा रहे हैं या कुछ और बात है, लेकिन यह तय है कि आप पर कोई आंच नहीं आएगी, क्योंकि मैं वैसे भी कोई सरकार के खिलाफ तो लिखवा नहीं रहा हूं।

तो फिर क्यों चाहते हैं कि आप के नाम से लेख छपे ? सभी को पता है आप ढंग से बोल तो सकते नहीं, लिखेंगे कैसे? अब मैं भी थोड़े आक्रामक मूड में आ गया था।

असल बात यह है कि हिंदी की पैसे वाली संस्था के चुनाव हैं और उनकी शर्त यही है कि लेख लिखा हो हाल फिलहाल, तो ही लड़ सकता है। फिर क्या मालूम हजार-पांच सौ साल बाद कभी खुदाई में मेरा यह लेख निकल आए और मेरे वंशज गर्व करें कि हमारे पूर्वज लेखक भी थे। ये राष्टवादी नेता भी तो इसी उम्मीद में धड़ल्ले से लिखवाए जा रहे हैं कि क्या पता नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया के साथ हमारा भी कोई लेख निकल आए। तब कौन देखता है कि जो लेख मिला है, कभी पढ़ा भी नहीं था !

ठीक है... लिख देता हूं तुम्हारे नाम से लेख...! लेकिन एक शर्त है। मैंने भी फच्चर फंसा ही दिया। क्या-क्या है शर्त ! वह खुश हो गया।

या तो केंद्र सरकार में मंत्री बन जाओ या फिर प्रधानमंत्री...! क्योंकि सिर्फ तुम्हारे नाम से तो कोई लेख छापेगा नहीं... करोड़ों के विज्ञापन दोगे क्या? वह चेहरा झुकाए उठ कर चला गया !

पर्यावरण दिवस: हमारे धार्मिक विश्वास और पर्यावरण

...और क्या कह रही है जिंदगी
ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

सुबह सुबह
वृक्ष झुक रहे हैं
उस दिशा की सिम्त
जहाँ हो ज़्यादा रौशनी
हम को चाहिये सौंदर्य
हम मोड़ देते हैं उसकी दिशा
बांध के रस्सियों से
और हो जाते हैं कसूरवार
एक दरख्त के सूखने के...।

भारतीय धार्मिक परंपराएँ केवल पूजा-पद्धति नहीं हैं, वे प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की शिक्षा भी देती हैं। हमारे धर्मों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को 'पंचतत्व' गया है। यह दृष्टि मनुष्य को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका संरक्षक मानती है। इसी कारण हमारी अनेक परंपराएँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण संरक्षण का कार्य करती हैं।

1. प्रकृति को देवतुल्य मानने की परंपरा

भारतीय संस्कृति में नदियों, पर्वतों, वृक्षों और पशुओं को पवित्र माना गया है। गंगा, यमुना, नर्मदा जैसी नदियों को 'माँ' कहा गया। पीपल, बरगद, तुलसी जैसे वृक्ष पूजनीय माने गए। गाय, नाग, हाथी, बंदर, मोर आदि जीव धार्मिक प्रतीकों से जुड़े रहे। जब किसी वस्तु को श्रद्धा मिलती है, तो मनुष्य उसका विनाश कम करता है। यह भाव पर्यावरण की रक्षा में सहायक बना।

2. वृक्ष पूजा और वन संरक्षण

हमारी परंपराओं में वृक्ष केवल पेड़ नहीं, जीवनदाता माने गए हैं। पीपल को प्राणवायु का प्रतीक माना गया। तुलसी को घर-घर लगाया गया, जिससे औषधीय और पर्यावरणीय लाभ मिले। वट सावित्री, आंवला नवमी जैसे पर्व वृक्षों से जुड़े हैं। प्राचीन भारत में 'देव वन' या 'पवित्र उपवन' बनाए जाते थे जहाँ पेड़ काटना निषिद्ध था। इससे जैव विविधता सुरक्षित रहती थी।

3. जल संरक्षण की संस्कृति

भारतीय धार्मिक जीवन में जल का अत्यंत महत्व है। कुएँ, बावड़ियाँ, तालाब और सरोवर बनवाना पुण्य कार्य माना जाता था। तीर्थस्थलों के आसपास जलस्त्रोतों की रक्षा की जाती थी। वर्षा जल को संपादित करने की परंपराएँ थी। धर्म ने लोगों में यह भावना जगाई कि जल केवल संसाधन नहीं, जीवन है।

4. संयम और सीमित उपभोग की शिक्षा

अधिकांश भारतीय दर्शन 'अपरिग्रह' यानी आवश्यकता से अधिक संग्रह न करने की शिक्षा देते हैं। सादा जीवन, कम उपभोग और संतोष की भावना प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम करती है। उपवास और व्रत भी केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि संयम का अभ्यास हैं। आज का उपभाक्तावाद जहाँ प्रकृति का अत्यधिक दोहन करता है, वहीं धार्मिक संयम संतुलन सिखाता है।

5. अहिंसा और जीव संरक्षण

महात्मा गांधी और भारतीय संत परंपरा ने अहिंसा को सर्वोच्च मूल्य माना। जैन, बौद्ध और हिंदू परंपराओं में जीवों के प्रति दया का भाव मिलता है। पशु-पक्षियों को दाना डालना। जीव हत्या से बचना। गौ संरक्षण। वन्य जीवों के प्रति करूणा। ये सब जैव विविधता को बचाने की भावना विकसित करते हैं।

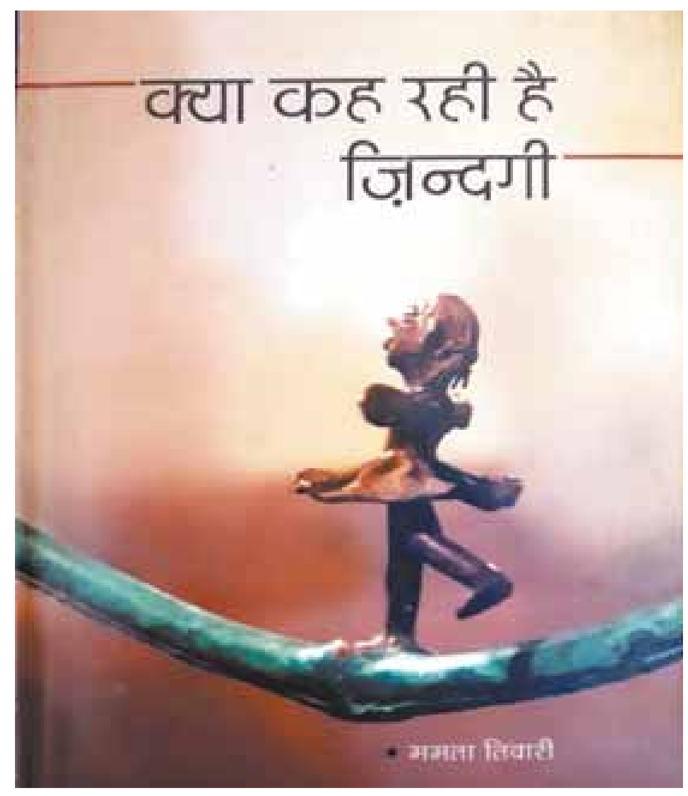

6. पर्व और ऋतुचक्र का संबंध

भारतीय त्योहार प्रकृति और ऋतुओं से जुड़े हुए हैं। मकर संक्रांति सूर्य और ऋतु परिवर्तन का उत्सव है। बैसाखी और पोंगल कृषि से जुड़े पर्व हैं। छठ पूजा सूर्य और जल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है। इन पर्वों के माध्यम से मनुष्य प्रकृति के साथ अपना संबंध महसूस करता है।

7. यज्ञ और पर्यावरण की अवधारणा

वैदिक यज्ञों का मूल भाव प्रकृति के प्रति आभार और संतुलन था। हालाँकि आधुनिक समय में किसी भी धार्मिक आयोजन में अत्यधिक धुआँ, प्लास्टिक या प्रदूषण पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकता है, लेकिन मूल वैदिक दृष्टि प्रकृति के साथ सामजस्य को थी।

8. धार्मिक शिक्षा का नैतिक प्रभाव

धर्म यह सिखाता है कि पृथ्वी केवल वर्तमान पीढ़ी की संपत्ति नहीं है।''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना पूरी धरती को परिवार मानती है। जब पृथ्वी परिवार बन जाती है, तब उसका संरक्षण नैतिक जिम्मेदारी बन जाता है।

आज की चुनौती

दुर्भाग्य से कुछ आधुनिक धार्मिक गतिविधियाँ - जैसे प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग, नदियों में कचरा विसर्जन, तेज ध्वनि प्रदूषण - पर्यावरण को नुकसान भी पहुँचाती हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी परंपराओं की मूल भावना को समझें, न कि केवल बाहरी आडंबर को।

भारतीय धार्मिक परंपराएँ मूलतः प्रकृति-सम्मत रही हैं। उन्होंने मनुष्य को यह सिखाया कि प्रकृति कोई वस्तु नहीं, बल्कि चेतना और जीवन का आधार है। वृक्ष पूजा, जल संरक्षण, अहिंसा, संयम और पंचतत्व की अवधारणा आज भी पर्यावरण संकट के समय अत्यंत प्रासंगिक हैं।

यदि हम अपनी परंपराओं के मूल संदेश को आधुनिक जीवन में अपनाएँ, तो धर्म केवल आस्था का विषय नहीं रहेगा, बल्कि पृथ्वी को बचाने की एक शक्तिशाली सांस्कृतिक चेतना बन सकता है।

यात्रायें बहुत कुछ सिखाती हैं
कहती हूँ मैं हर बार
फिर इस बार क्या सीखा मैंने
मन के शोर से बेहतर है
झरने का कलसा झलकाना
पत्तों पर गिरती बूंदे टप-टप
सीटी की धुन निकालती
पक्षी की आवाज़
एक और नया हुनर सीखा
प्रकृति से
बिना बोले व्यक्त करना
चुपचाप दर्द सहना
समय के हिसाब से बदलना
हमें सिखाना कि सबको
उनकी मर्ज़ी पे छोड़ा जाये
गोल गोल घूमते रास्ते
जीवन का सुख दुःख दर्शाते
तो नये सिरे से बारहखड़ी
सीखने का सफ़र शुरू हुआ
कि प्रकृति तुमने हमें ऐसे छुआ !

माफी पर मोल-भाव नहीं हो सकता

दृष्टिकोण
❑ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

अ रवांडा नरसंहार (1994) के लगभग अठारह बरस बाद सुलह और एकता की कोशिश शुरू हुई है, लेकिन क्या सच सामने आएगा? क्या माफी मुमकिन है? सच क्या हो सकता है, जब कुछ बातें कही नहीं जा सकतीं, गहराई में दबी हों, जिन्हें हम भूल नहीं सकते। कान फिल्म फेस्टिवल में रवांडा की डायरेक्टर मैरी-क्लेमेंटाइन दुसाबेजाम्बो की पहली फीचर फिल्म बेन इमाना अफ्रीकी कहानी है, लेकिन यह इंसानी हिम्मत बन जाती है।

क्या माफी ही चाबी है? क्या वाकई किसी को पूरी माफी मिल सकती है? माफी पर मोलभाव नहीं कर सकते या इसे खरीद नहीं सकते। दो बहन वेनेरांडा और सुजैन नरसंहार के लिए जिम्मेदार को ढूंढने के लिए गांव की महिलाओं को गवाही तैयार करने और बेइज्ज़ती से बचने के लिए बैठक बुलाती हैं। कहती हैं- हमारे साथ आप रो सकती हैं, चिल्ला सकती हैं,

अपनी बात कहने के लिए आज़ाद हैं। नरसंहार के दोषियों पर ट्रायल चल रहा है, लेकिन लगता है कि परिवारों को तकलीफ खुद ही बतानी और इंसाफ मांगना है। हिंसा के दर्दनाक और साफ ब्यौरे, अपराधों की वजह से समुदायों के बीच तनाव के हल नहीं हैं। बार- बार माफी की गुजारिशें ज्यादा बेइज्जत और बेकार हो जाती हैं। कोर्ट में गवाही सुनते हैं, जिसमें हैं और सुनकर अंदर से आवाज आती है कि इन्हें तो सजा मिलना ही चाहिए।कहानियों, किरदारों और थीम को जोड़कर काम करती है, जैसे कपड़ों, स्कार्फ, पर्दों, बेडकवर, स्कूल यूनिफॉर्म में दिखने वाले रंगीन कपड़े या बगीचे में मारे गए बच्चों के फटे कपड़े। यह ऐसी बुनाई है, जिसमें खामोशी भी शब्दों जितनी ही जरूरी है।

निर्देशक इस तनाव को धुंध से ढंकी पहाड़ियों के जरिए परदे पर कविता बना देते देते हैं। पुरानी तस्वीरें भी बड़ी लगती हैं। कहती हैं- समाज में महिलाओं का असर और ताकत तो है, लेकिन दिखती नहीं है। यह ऐसा समाज है, जहां महिलाओं को खास दर्जा हासिल है और ऐसी महिलाएं भी हैं, जिन्होंने हत्याओं में हिस्सा लिया। इस जगह जहां हम सब मिले, मैं महिलाओं के दिलों में जाकर उनकी धड़कन ढूंढना चाहती थी।

पता बदल गया, तड़प नहीं बदली

कला आयाम
डॉ. शेफाली चतुर्वेदी
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

जो कभी अपना घर छोड़कर गए हैं चाहे मजबूरी में, चाहे मन मारकर उनसे पूछिए। वे बताएंगे कि मकान छूट जाता है, घर नहीं छूटता। सन् 1990 की उस काली रात को जब कश्मीर घाटी के लाउडस्पीकरों से चेतावनी गूंजी, तो 44,000 से ज़्यादा कश्मीरी पंडित परिवार अपना घर-द्वार छोड़कर निकल पड़े – सामान कम, यादें ज़्यादा लेकर। उनका दर्द संसद तक पहुंचा, दस्तावेज़ों में दर्ज हुआ। लेकिन मैं छत्तीसगढ़ में पली-बढ़ी हूं, और मुझे पता है कि विस्थापन का दर्द सिर्फ़ खबरों में आने वाला नहीं होता। बस्तर से जितने लोग संघर्ष, गरीबी और जीवन की धीमी मिटती तस्वीर के कारण पलायन कर गए, उनकी संख्या शायद कश्मीर से भी ज़्यादा हो। उनके नाम ट्रेंड नहीं करते। उनकी कहानियां टीवी पर नहीं आतीं। लेकिन अपनी ज़बान, अपनी ज़मीन और अपनेपन की वो तलाश – जो आज भी उनके मन में कहीं गहरे धड़कती है – वो कश्मीरी पंडित की तड़प से कहीं अलग नहीं है।

यही भारत की वो सच्चाई है जो अक्सर अनकही रह जाती है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के अनुसार 2023 तक देश के भीतर ही 40 करोड़ से ज़्यादा भारतीय एक जगह से दूसरी जगह जाकर बसे हैं – काम के लिए, पढ़ाई के लिए, ज़िंदगी के लिए। और सरहद के उस पार, विदेश मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि साढ़े तीन करोड़ से ज़्यादा भारतीय दुनिया के दो सौ से ज़्यादा देशों में बसे हैं – दुनिया का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय। ये लोग भारत को पते की तरह नहीं, एहसास की तरह जीते हैं – रोज़ की आदतों में, त्योहारों की खुशबू में, उस एक पल की याद में जब घर सच में घर था।

यही एहसास भारत वेनिस ले गया है।

वेनिस के ऐतिहासिक आर्सेनाले में एक चौदहवीं सदी के गोदाम के भीतर, भारत का राष्ट्रीय मंडप इस साल एक अलग ही भाषा बोल रहा है। दूरियों का भूगोल- घर को याद करते हुए – न शोर मचाता है, न चमक-दमक दिखाता है। संस्कृति मंत्रालय, नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर और सेरेंडिपिटी आर्ट्स के साझे प्रयास से सजा यह मंडप, क्यूरेटर डॉ. अमीन जाफर की देखरेख में, बस एक सवाल पूछता है – जब जगह नहीं रहती, तो घर कहां रहता है?

इस सवाल का जवाब यहां धागों में है।

दिल्ली की कलाकार सुमाक्षी सिंह ने अपना पुराना घर 33 लिंक रोड जो 74 साल तक पांच पीढ़ियों को छाया देता रहा और फिर शहरी विकास की बलि चढ़ गया वेनिस में धागों से बुन दिया है। बालों से भी महीन रेशमी, सूती और नायलॉन के धागों से। दीवारें हैं, खिड़कियां हैं, दरवाज़े हैं, सीढ़ियों का साया है सब कुछ, मगर छूने पर कुछ नहीं। हवा में लटके उस घर में कोई रह नहीं सकता, मगर हर कोई उसमें अपना घर देख सकता है। सुमाक्षी कहती हैं , हम सबके भीतर कहीं न कहीं वो तड़प बसी है, किसी जगह से जुड़े रहने की, भले ही वो जगह अब रही न हो।

वेनिस की उन सदियों पुरानी दीवारों के बीच, भारत ने दुनिया को वो कहानी सुनाई जो करोड़ों भारतीय पहले से अपने सीने में दबाए जी रहे हैं

उनके साथ चार और कलाकार इस प्रदर्शनी को पूरा करते हैं। अलवर बालासुब्रमण्यम तमिलनाडु की मिट्टी को महीनों तक सूखने देते हैं जब तक उसमें दरारें न पड़ जाएं , हर दरार समय की एक इबारत, एक ऐसी कहानी जो कोई मशीन नहीं लिख सकती। रंजनी शेट्टार कर्नाटक की पुरानी शिल्प परंपराओं से प्रेरित होकर हाथों से गढ़े फूलनुमा ढांचे छत से लटकाती हैं एक ऐसा बगीचा जो ज़मीन से नहीं, याद से उगा है। लद्दाख के युवा कलाकार स्करमा सोनम ताशी पुरानी कॉपियों और अखबारों के गीले कागज़ से अपना पूरा गांव बना देते हैं नाज़ुक इसलिए नहीं कि कमज़ोर हैं, बल्कि इसलिए कि सच्चाई नाज़ुक होती है। और असिम वाकिफ बांस का एक विशाल ढांचा खड़ा करते हैं भारत के हर निर्माण स्थल पर दिखने वाला वो मचान जिसे कोई कभी ध्यान से नहीं देखता, मगर जिसके बिना कुछ भी नहीं बनता।

पांचों मिलकर भारत को दिखाते नहीं, याद करते हैं मिट्टी में, धागे में, बांस में, उन सामग्रियों में जिन्हें सभ्यताएं तब थामती हैं जब शब्द कम पड़ जाते हैं। जैसे-जैसे हमारा देश आगे बढ़ रहा है, यह मंडप हमारी सांस्कृतिक स्मृति की ताकत और कला की उस शक्ति को दर्शाता है जो भारत को दुनिया से जोड़ती है। उद्घाटन समारोह में केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा । सात साल बाद वेनिस लौटा भारत इस बार ताकत का नहीं, संवेदना का प्रदर्शन लेकर आया है। और दुनिया इसे नोटिस कर रही है। अंतरराष्ट्रीय आलोचक इस मंडप को इस साल की सबसे भावनात्मक रूप से गहरी और ईमानदार प्रस्तुति बता रहे हैं। इस पूरे बियेनाले में जहां डिजिटल स्क्रीनें और तकनीकी चमत्कार भरे पड़े हैं, वहां भारत का हाथ से बना, धीमे-धीमे रचा गया यह संसार सबसे ऊंची आवाज़ में बोल रहा है।

कश्मीर की वो चाबी जो किसी ताले में नहीं लगती। बस्तर का वो गांव जो नक्शे पर है मगर यादों में नहीं। विदेश में बैठा वो बेटा जो त्योहार पर वीडियो कॉल से घर आता है। यह प्रदर्शनी उन सबके लिए है।